وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख मुजाहिदअहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

वर्ष- 11
अंक -8-09

Postal Reg. No.GDP -45/2026-2028

01-08 रमज़ान 1447 हिज्री कमरी, 26-19 तबलीग़ग़ 1405 हिज्री शम्सी, 19-26 फ़रवरी 2026 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

شَہۡرُ رَمَضَانَ الَّذِیۡۤ اُنۡزِلَ فِیۡہِ الۡقُرۡاٰنُ ہُدًی لِّلنَّاسِ وَبَیِّنٰتٍ مِّنَ الۡہُدٰی وَالۡفُرۡقَانِ ۚ فَمَنۡ شَہِدَ مِنۡکُمُ الشَّہۡرَ فَلۡیَصُمۡہُ ؕ وَمَنۡ کَانَ مَرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ یُرِیۡدُ اللّٰہُ بِکُمُ الۡیُسۡرَ وَلَا یُرِیۡدُ بِکُمُ الۡعُسۡرَ ۫ وَلِتُکۡمِلُوا الۡعِدَّۃَ وَلِتُکَبِّرُوا اللّٰہَ عَلٰی مَا ہَدٰىکُمۡ وَلَعَلَّکُمۡ تَشۡکُرُوۡنَ ﴿۱۸۶﴾ (سورۃ البقرہ:186)

रमज़ान का महीना, जिसमें क़ुरआन-ए-करीम मनुष्यों के लिए एक महान मार्गदर्शन के रूप में उतारा गया, और ऐसे स्पष्ट चिन्हों के रूप में जो मार्गदर्शन की विस्तारपूर्वक व्याख्या करते हैं और सत्य व असत्य में अंतर कर देने वाली बातें बताते हैं। अतः तुम में से जो कोई इस महीने को पाए, वह इसके रोज़े रखे। और जो बीमार हो या यात्रा पर हो, तो गिनती को अन्य दिनों में पूरा करे। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए कठिनाई नहीं चाहता, और चाहता है कि तुम (सुविधा से) गिनती को पूरा करो और उस मार्गदर्शन के कारण अल्लाह की महानता बयान करो जो उसने तुम्हें प्रदान की, और ताकि तुम कृतज्ञ बनो।

ईसा अलैहिस्सलाम मरियम के पुत्र पृथ्वी पर अवतरित होंगे, वे विवाह करेंगे और उनकी सन्तान होगी

حَدَّثَنَا یَحۡیَی بۡنُ أَیُّوبَ وَقُتَیۡبَۃُ وَابۡنُ حُجۡرٍ قَالُوا حَدَّثَنَا إِسۡمَاعِیلُ وَهُوَ ابۡنُ جَعۡفَرٍ عَنۡ أَبِی سُهَیۡلٍ عَنۡ أَبِیهِ عَنۡ أَبِی هُرَیۡرَةَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡهُ أَنَّ رَسُولَ اللّٰہِ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قَالَ إِذَا جَاءَ رَمَضَانُ فُتِّحَتۡ أَبۡوَابُ الۡجَنَّةِ وَغُلِّقَتۡ أَبۡوَابُ النَّارِ وَصُفِّدَتِ الشَّیَاطِینُ.

(सहीह मुस्लिम, किताबुस्सियाम, बाब नंबर 1, हदीस नंबर 1779)

अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जब रमज़ान आता है तो जन्नत के दरवाज़े खूब खोल दिए जाते हैं, और आग (जहन्नम) के दरवाज़े अच्छी तरह बंद कर दिए जाते हैं, और शैतान जकड़ दिए जाते हैं।

जब गैर-मोहरम पुरुष और स्त्री एकत्र होते हैं, तो उनमें तीसरा शैतान होता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

तक़वा और खुदा-तरसी ज्ञान से पैदा होती है

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"तक़वा और खुदा-तरसी ज्ञान से पैदा होती है। जैसा कि खुद अल्लाह तआला फ़रमाता है

اِنَّمَا یَخۡشَی اللّٰہَ مِنۡ عِبَادِہِ الۡعُلَمٰٓؤُا (फ़ातिर: 29)

अर्थात अल्लाह तआला से वही लोग डरते हैं जो ज्ञान वाले हैं।

इससे साफ़ पता चलता है कि सच्चा ज्ञान अल्लाह का डर पैदा कर देता है। और खुदा तआला ने ज्ञान को तक़्वा से जोड़ा है कि जो व्यक्ति पूरी तरह से ज्ञान वाला होगा, उसके अंदर ज़रूर अल्लाह का डर पैदा होगा।"

आपने आगे फ़रमाया:

"मेरी समझ में ज्ञान से मुराद इल्मुल क़ुरआन है। इससे दर्शन, विज्ञान या दूसरे प्रचलित ज्ञान मुराद नहीं हैं, क्योंकि उन्हें हासिल करने के लिए तक़वा और नेकी की शर्त नहीं होती। बल्कि जैसे एक बदकार व्यक्ति उन्हें सीख सकता है, वैसे ही एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी। लेकिन इल्मुल क़ुरआन सिवाय तक़्वा रखने वाले और धर्मनिष्ठ के किसी और को दिया ही नहीं जाता। इसलिए यहाँ ज्ञान से मुराद इल्मुल क़ुरआन ही है, जिससे तक़वा और अल्लाह का डर पैदा होता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 599, संस्करण 2003, प्रकाशित रब्वा)

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"'उलमा' शब्द से धोखा नहीं खाना चाहिए। आलिम वही होता है जो अल्लाह तआला से डरता है।

اِنَّمَا یَخۡشَی اللّٰہَ مِنۡ عِبَادِہِ الۡعُلَمٰٓؤُا (फ़ातिर: 29)

अर्थात निश्चय ही अल्लाह तआला से डरने वाले लोग ही उसके बंदों में आलिम हैं। उनमें बंदगी और अल्लाह का डर इस हद तक पैदा हो जाता है कि वे खुद अल्लाह तआला से एक विशेष ज्ञान और पहचान सीखते हैं और उसी से लाभ पाते हैं। यह दर्जा और मक़ाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पूरी पैरवी और आप से सच्ची मुहब्बत के कारण मिलता है, यहाँ तक कि इंसान पूरी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के रंग में रंगा जाता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 434–433, संस्करण 2003, प्रकाशित रब्वा)

★ ★ ★

तफ़सीर-ए-कबीर से अंश

ख़शियत शब्द में उस चीज़ की पहचान का अर्थ भी शामिल है, जिससे डर किया गया हो

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अर-रअद की आयत नंबर 22

وَالَّذِیۡنَ یَصِلُوۡنَ مَاۤ اَمَرَ اللّٰہُ بِہٖۤ اَنۡ یُّوۡصَلَ وَیَخۡشَوۡنَ رَبَّہُمۡ وَیَخَافُوۡنَ سُوۡٓءَ الۡحِسَابِ

की तफ़सीर में बयान फ़रमाते हैं:

ख़शियत शब्द में उस चीज़ की पहचान का अर्थ भी होता है, जिससे डर किया गया हो। यानी ख़शियत शब्द उसी समय बोला जाता है, जब उस चीज़ की सही पहचान हासिल हो, जिससे डर किया जा रहा हो। इसके अलावा यह डर किसी नुकसान या हानि का नहीं होता, बल्कि इस कारण होता है कि इंसान यह यक़ीन करे कि वह चीज़ बहुत ऊँचे दर्जे और महानता वाली है। ऐसा न हो कि मेरी किसी लापरवाही की वजह से मैं उसके क़रीब होने का दर्जा खो बैठूँ।

इस प्रकार खुदा तआला की ख़शियत का मतलब यह हुआ कि जब इंसान खुदा तआला से संबंध के दर्जे को पा लेता है, तो क्योंकि उस पर यह बात खुल जाती है कि यही दर्जा इंसान की सच्ची राहत और पूर्णता का दर्जा है, इसलिए वह उसके छिन जाने के ख़याल को भी सहन नहीं कर सकता। वह हर समय उसकी हिफ़ाज़त की कोशिश में लगा रहता है और पूरी तरह इसका

शेष 2 पर

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

74वें वर्ष में देश विभाजन के बाद अख़बार बदर (संपादकीय)

साप्ताहिक बदर, क़ादियान का प्रकाशन यद्यपि हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक ज़माने में सन 1902 ई. में हुआ था और इसके पहले संपादक हज़रत मुहम्मद अफ़ज़ल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु थे, जो इस अख़बार के मालिक भी थे। प्रारम्भ में इसका नाम हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने "अल-बदर" सुझाया था। मुकर्रम मुहम्मद अफ़ज़ल साहब का देहांत सन 1905 ई. में हुआ, जिसके बाद हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब को अख़बार अल-बदर का संपादक नियुक्त किया। हज़रत मुफ़्ती साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के ही कार्यकाल में अख़बार का नाम अल-बदर से बदलकर बदर रखा गया।

हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने मुबारक समय में क़ादियान से प्रकाशित होने वाले दोनों अख़बारों "अल-हकम" और "बदर" के बारे में फ़रमाया कि ये आप के दोनों बाज़ू हैं और तुरंत आप के इल्हामात और इरशादात को देश के कोने-कोने में प्रकाशित कर देते हैं।

अख़बार बदर सन 1913 ई. तक प्रकाशित होता रहा, फिर बंद हो गया। देश विभाजन के बाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु की हिदायत और दुआओं तथा दरवेशान-ए-क़ादियान की कोशिशों से फिर क़ादियान से साप्ताहिक बदर का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसका पहला अंक 7 मार्च 1952 ई. को प्रकाशित हुआ। देश विभाजन के बाद इसके पहले संपादक के रूप में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी, मुकर्रम बरकात अहमद साहब राजेकी, पुत्र हज़रत ग़ुलाम रसूल साहब राजेकी रज़ियल्लाहु अन्हु, नियुक्त किए गए।

इस अख़बार की पहली ही प्रकाशित प्रति (7 मार्च) के अवसर पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ऐतिहासिक संदेश भी भेजा, जिसमें आपने फ़रमाया:

"सबसे पहले तो मैं ख़ुदा तआला से दुआ करता हूँ कि वह इस अख़बार को और से और बेहतर काम करने की तौफ़ीक़ दे और इस अख़बार को चलाने वालों को बाहरी और भीतरी ज्ञान प्रदान करे, जिससे वे क़ौम और देश की सही राहनुमाई कर सकें, और जमाअत अहमदिया को इस बात की तौफ़ीक़ दे कि वे अधिक से अधिक इस अख़बार को ख़रीदें और इसकी प्रसार संख्या को बढ़ाते चले जाएँ तथा देश के हर कोने में इसे फैलाएँ, यहाँ तक कि यह अख़बार दैनिक बन जाए और व्यापक रूप से प्रकाशित हो।

इस अख़बार का नाम बदर रखा गया है और यह नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को प्रिय था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रोया और कश्फ़ प्रकाशित करने में एक समय इस अख़बार को विशेष महत्व प्राप्त हो गया था, क्योंकि इसके संपादक मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहब ही थे और वही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के निजी सचिव का कार्य भी करते थे। इस कारण उन्हें इल्हामात दूसरों की अपेक्षा जल्दी प्राप्त हो जाते थे। लेकिन मुझे आशा है कि अब इन इल्हामात की व्याख्या, तफ़सीर, उनका उद्देश्य और आशय बताने तथा प्रकाशित करने में यह अख़बार आगे रहेगा।"

आदरणीय पाठको! आज भी अख़बार बदर का यही उद्देश्य है। अब बदर के प्रकाशन का पहला लक्ष्य यही है कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के सभी इरशादात जो वास्तव में क़ुरआन-ए-करीम और हदीस तथा सैयदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हामात, इरशादात और लिखित रचनाओं की व्याख्याएँ हैं उन्हें बदर के पाठकों तक पहुँचाया जाए। इसी कारण बदर का संस्थान प्रयास करता है कि इस अख़बार के माध्यम से हुज़ूर अनवर का ख़ुत्बा-ए-जुमआ, हुज़ूर अक़्दस के अन्य ख़िताबात, आपके दौरों की रिपोर्टें तथा मजालिस-ए-इरफ़ान, जमाअत अहमदिया हिंदुस्तान की सेवा में प्रस्तुत की जाएँ। इसी प्रकार हुज़ूर अक़्दस के निर्देशानुसार अब हर सप्ताह समसामयिक परिस्थितियों पर आधारित संपादकीय और अन्य लेख भी प्रकाशित किए जाते हैं।

मुबल्लिग़ीन/मुअल्लिमीन और जमाअत के सदस्य यदि अपने मूल्यवान लेख और जमाअती प्रयासों पर आधारित अपनी रिपोर्टें उमरा-ए-ज़िला के माध्यम से तथा अपने स्थानीय दफ़्तर के द्वारा भेजें, तो इंशा अल्लाह उनकी कोशिशों की रिपोर्टें न केवल उर्दू अख़बार बदर में, बल्कि बदर के अन्य भाषाओं के संस्करणों में भी प्रकाशित की जाएँगी, ताकि जमाअत के सदस्य अपने इस अख़बार से व्यक्तिगत जुड़ाव महसूस करें और इससे अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास करें।

अख़बार की वास्तविक शोभा तो क़ुरआन-ए-करीम, हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मल्फ़ूज़ात की रोशनी में प्रकाशित हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के फ़रमान और इरशादात से ही है। और इसकी सुंदरता में और निखार तब आएगा, जब हम इन इरशादात को न केवल स्वयं अपने जीवन का हिस्सा बनाएँगे, बल्कि यह भी प्रयास करेंगे कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ भी इससे लाभान्वित हों।

अख़बार बदर ख़िलाफ़त-ए-हक़्क़ा इस्लामिया से हमारे संबंध को मज़बूत करने का ज़रिया है और यही संबंध हमारी शारीरिक और आत्मिक उन्नति का माध्यम है। सैयदना हज़रत अक़्दस अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला ने पिछले वर्ष दिसंबर माह में अख़बार बदर के विशेष अंक "क़ौमी एकता नंबर" के लिए जो दूरदर्शी संदेश भेजा था, उसमें जमाअत अहमदिया हिंदुस्तान के सदस्यों को नसीहत करते हुए फ़रमाया था:

"ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से आज एकता केवल और केवल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत की विशेषता है। शेष सब विभाजन का शिकार हैं और रहेंगे, जब तक वे ख़ुदा तआला की इस नेमत की क़द्र नहीं करेंगे। इसलिए हम ख़ुशक़िस्मत हैं कि ख़िलाफ़त की बरकत से तरक़्क़ी के मार्गों पर आगे बढ़ रहे हैं और पूरे संसार में इस्लाम का परचम बुलंद करते चले जा रहे हैं।"

अतः जमाअत के सदस्यों से दर्दमंद अपील है कि क़ौमी एकता का प्रमाण देते हुए सैयदना हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह मुबारक तोहफ़ा, जो अख़बार बदर के रूप में हर सप्ताह आपको मिलता है, उसके अधिक से अधिक ख़रीदार बनाने का प्रयास करें। कोई भी अहमदी घर ऐसा नहीं होना चाहिए जो अख़बार बदर का ख़रीदार न हो। हर भाषा में इसके ख़रीदार बढ़ाने की आवश्यकता है। जिन साथियों को ख़ुदा तआला ने सामर्थ्य दी है, वे इसकी आर्थिक सहायता की ओर भी क़दम बढ़ाएँ, ताकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अमीरुल मोमिनीन की इच्छाओं के अनुसार इस अख़बार का दायरा देश के कोने-कोने में फैल जाए और जमाअत अहमदिया हिंदुस्तान का यह एकमात्र आधिकारिक पत्र जो हमारे क़ौमी सम्मान और जमाअती प्रतिष्ठा का प्रतीक है अपने पैरों पर खड़ा होकर हर ओर अपनी छाया फैलाए और इसके आत्मिक फल से पूरा हिंदुस्तान लाभ उठाता रहे। वबिल्लाहुतौफ़ीक़

★ ★ ★

पृष्ठ 2 का शेष

ध्यान रखता है कि जो क़रीबी का दर्जा उसे मिला है, वह किसी लापरवाही की वजह से न खो जाए।

इसी निशानी का दूसरा हिस्सा यह बताया गया है कि

وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ

अर्थात एक ओर तो उसे ख़ुदा तआला के क़रीब होने के दर्जे की हिफ़ाज़त की चिंता लगी रहती है, तो दूसरी ओर वह इस बात से भी डरता रहता है कि बंदों पर दया और भलाई का जो दर्जा उसे मिला था, उसमें किसी तरह की कमी की वजह से वह ख़ुदा तआला की नाराज़गी का पात्र न बन जाए।

पहली दो निशानियों में, क्योंकि ख़ुदा तआला से संबंध को मूल और उसकी मख़लूक़ पर दया को उसका परिणाम बताया गया था, इसलिए तीसरे प्रमाण में भी उसी के अनुसार ख़ुदा तआला से संबंध में कमी के लिए 'ख़शियत' शब्द और मख़लूक़ से संबंध में कमी के लिए 'ख़ौफ़' शब्द इस्तेमाल किया गया है। क्योंकि पहला शब्द इस बात की ओर संकेत करता है कि जिससे डर किया जा रहा है, वह अपने आप में लक्ष्य है। जबकि 'ख़ौफ़' शब्द ज़रूरी नहीं कि अपने आप में लक्ष्य के लिए ही बोला जाए, बल्कि कई बार यह शब्द ऐसी चीज़ के लिए भी बोला जाता है, जिससे दूर रहना मक़सूद हो। हालाँकि कभी-कभी यह शब्द अपने आप में लक्ष्य चीज़ की नाराज़गी के लिए भी इस्तेमाल हो जाता है।

(तफ़सीर कबीर, जिल्द 5, पृष्ठ 54, तफ़सीर सूरह अर-रअद, आयत 22 के अंतर्गत)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

“मैं निश्चित रूप से समझता हूँ कि कंजूसी और ईमान एक ही दिल में एक साथ इकट्ठे नहीं हो सकते। जो व्यक्ति सच्चे दिल से ख़ुदा तआला पर ईमान लाता है, वह अपने धन को केवल वही नहीं समझता जो उसके संदूक में बंद है, बल्कि वह ख़ुदा तआला के सभी ख़ज़ानों को अपना ख़ज़ाना समझता है, और कंजूसी उससे इस तरह दूर हो जाती है जैसे रोशनी से अंधेरा दूर हो जाता है।”

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

अल्लाह तआला फरमाता है कि असली क़ुर्बानी तो यह है कि जिस चीज़ से तुम्हें प्रेम है, उसे उसकी राह में खर्च करो। तभी तुम अल्लाह तआला की रज़ा पाने वाले बन सकोगे और उसके फ़ज़लों के वारिस बन सकोगे।

अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि जमाअत-ए-अहमदिया आलमगीर की अधिकतर संख्या आर्थिक क़ुर्बानियों में बहुत खुशी से हिस्सा लेती है, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिनमें संकोच होता है।

तो उन्हें अल्लाह तआला की यह बात याद रखनी चाहिए कि अल्लाह की राह में धन खर्च करना आवश्यक है।

क़ौम की हमदर्दी का भी यही तकाज़ा है और मानवता की हमदर्दी का भी यही तकाज़ा है कि हम अल्लाह तआला की राह में खर्च करें, जिसमें से लोगों की मदद के लिए भी खर्च हो और इस्लाम के प्रचार के लिए भी खर्च हो।

मैंने देखा है कि अक्सर गरीबों में से या मध्यम वर्ग के कमाने वाले लोग बहुत बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियाँ करते हैं,

क्योंकि उन्हें यह समझ होती है कि अल्लाह तआला यह धन हमें लौटाएगा या हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनेंगे।

हमने अनुभव भी किया है कि किस तरह अल्लाह तआला लोगों को लगातार नवाज़ता चला जाता है, क्योंकि वे समझते हैं कि सारे ख़ज़ाने अल्लाह तआला के पास ही हैं।

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़-ए-जदीद के अड़सठवें (68) वर्ष के दौरान दुनिया भर की जमाअतों को लगभग पंद्रह मिलियन पाउंड की आर्थिक क़ुर्बानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली।

पिछले वर्ष की तुलना में यह एक दशमलव तीन मिलियन पाउंड अधिक है।

अल्लाह तआला उन सभी क़ुर्बानी करने वालों के धन और जीवन में असीम बरकत प्रदान करे।

वक़्फ़-ए-जदीद के अड़सठवें (68) वर्ष के दौरान जमाअत के सदस्यों की ओर से प्रस्तुत की गई आर्थिक क़ुर्बानियों का उल्लेख और उनहत्तरवें (69) वर्ष के आरंभ की घोषणा।

विभिन्न देशों से संबंधित निष्कपट अहमदियों की आर्थिक क़ुर्बानियों के ईमान बढ़ाने वाले घटनाओं का प्रेरणादायक वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ’मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 09 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ۵ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۔ (آل عمران:93)

इस आयत का अनुवाद है कि तुम हरगिज़ नेकी को प्राप्त नहीं कर सकोगे, जब तक कि तुम उन चीज़ों में से खर्च न करो जिनसे तुम प्रेम करते हो। और जो कुछ भी तुम खर्च करते हो, निस्संदेह अल्लाह उसे भली-भाँति जानता है।

इसकी व्याख्या में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने लिखा है कि

“क़ुरआन-ए-करीम में सूरह बक़रा में जहाँ पहला रुकू शुरू होता है, वहाँ मुत्तक़ी के बारे में कहा गया है وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ। अर्थात जो कुछ अल्लाह ने दिया है, उसमें से खर्च करते हैं। यह तो पहले रुकू का उल्लेख है। फिर इसी सूरह में कई स्थानों पर अल्लाह की राह में खर्च करने की बड़ी-बड़ी ताकीदें आई हैं... अतः तुम वास्तविक नेकी को नहीं पा सकते, जब तक कि तुम धन से खर्च न करो।”

फरमाते हैं कि “مِمَّا تُحِبُّوْنَ के अर्थ मेरे निकट धन हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फरमाता है وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ (अल-आदियात: 9)। मनुष्य को धन बहुत प्रिय होता है। इसलिए सच्ची नेकी पाने के लिए आवश्यक है कि अपनी प्रिय वस्तु अर्थात धन में से खर्च करते रहो।”

(हक़ाक़िक़ुल-फ़ुरक़ान, जिल्द 1, पृष्ठ 500)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी विभिन्न स्थानों पर इसकी व्याख्या की है। एक स्थान पर आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

“धन के साथ अत्यधिक प्रेम नहीं होना चाहिए। अल्लाह तआला फरमाता है لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ। तुम हरगिज़ नेकी को नहीं पा सकते, जब तक कि तुम उन चीज़ों में से अल्लाह की राह में खर्च न करो जिनसे तुम प्रेम करते हो।”

फिर फरमाते हैं

“बेकार और निकम्मी चीज़ों को खर्च करके कोई व्यक्ति नेकी करने का दावा नहीं कर सकता। नेकी का दरवाज़ा तंग है। इसलिए यह बात अच्छी तरह समझ लो कि निकम्मी चीज़ों को खर्च करने से कोई उसमें प्रवेश नहीं कर सकता। क्योंकि स्पष्ट आदेश है لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ। जब तक अत्यंत प्रिय और सबसे प्यारी चीज़ों को खर्च नहीं करोगे, तब तक प्रिय और सम्मानित होने का दर्जा नहीं मिल सकता। यदि तुम कष्ट उठाना नहीं चाहते और सच्ची नेकी को अपनाना नहीं चाहते, तो कैसे सफल और कामयाब हो सकते हो?”

(तफ़सीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, जिल्द 2, पृष्ठ 130-131)

अतः वे लोग जो कभी-कभी अच्छा कमाते हैं, लेकिन अपनी आर्थिक क़ुर्बानियों में उस स्तर पर नहीं होते, जितना एक साधारण कमाने वाला या मध्यम स्तर का कमाने वाला अहमदी होता है ऐसे लोगों को सोचना चाहिए कि अल्लाह तआला फरमाता है कि असली क़ुर्बानी यही है कि जिस चीज़ से तुम्हें प्रेम है, उसे उसकी राह में खर्च करो। तभी तुम अल्लाह तआला की रज़ा पाने वाले बन सकोगे और उसके फ़ज़्लों के वारिस बन सकोगे।

अल्लाह तआला ने केवल एक-दो स्थानों पर नहीं, बल्कि क़ुरआन-ए-करीम में अनेक स्थानों पर अल्लाह की राह में खर्च करने का आदेश दिया है।

उदाहरण के लिए एक स्थान पर अल्लाह तआला फरमाता है

وَ اَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ لَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ وَ اَحْسِنُوْا اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ۔ (अल-बक़रा: 196)

अर्थात अल्लाह के रास्ते में अपना धन और जीवन खर्च करो और अपने ही

हाथों अपने आपको विनाश में न डालो, और भलाई से काम लो। निस्संदेह अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है।

अतः अल्लाह तआला की राह में ख़र्च न करना कभी-कभी विनाश का कारण बन जाता है।

एक ओर यह दावा कि हम इस युग में समय के इमाम को मानने वाले हैं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी को पूरा करने वाले हैं और आपकी भविष्यवाणी के अनुसार हम मसीह मौऊद की जमाअत में शामिल हुए हैं और दूसरी ओर कभी-कभी आर्थिक क़ुर्बानियों में संकोच पैदा होना यह ठीक नहीं है।

सामान्य रूप से जमाअत में इस ओर बहुत ध्यान है, लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने बहुत अधिक संपन्नता दी है और उनमें यह विचार पैदा हो जाता है।

अल्लाह तआला का फ़ज़्ल है कि जमाअत की अधिकतर संख्या आर्थिक क़ुर्बानियों में बहुत ख़ुशी से भाग लेती है, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, कुछ ऐसे भी हैं जिनमें संकोच होता है। इसलिए उन्हें अल्लाह तआला की यह बात याद रखनी चाहिए कि अल्लाह की राह में धन ख़र्च करना आवश्यक है।

अधिक कमाने वालों में निस्संदेह कुछ ऐसे भी हैं जो विभिन्न तहरीकों में भाग लेते हैं और बहुत बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं, लेकिन यहाँ प्रसंगवश मैं यह भी बता दूँ कि जो चंदा उनकी आय के हिस्से आदि के अनुसार देना चाहिए, वह सही दर से अदा नहीं करते और उसमें नियमित भी नहीं हैं। ऐसे लोगों को अपना आत्म-निरीक्षण करना चाहिए।

फिर अल्लाह तआला क़ुरआन शरीफ़ में एक और स्थान पर फरमाता है

اٰمِنُوۡا بِاللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ اَنۡفِقُوۡا مِمَّا جَعَلَکُمۡ مُّسۡتَخۡلَفِیۡنَ فِیۡہِ فَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا مِنۡکُمۡ وَ اَنۡفَقُوۡا لَہُمۡ اَجۡرٌ کَبِیۡرٌ۔

(अल-हदीद: 8)

अर्थात ऐ लोगो! अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिन संपत्तियों का तुम्हें (पहली क़ौमों के बाद) मालिक बनाया गया है, उनमें से ख़र्च करो। और तुम में से जो ईमान लाते हैं और अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहते हैं, उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है।

अतः अल्लाह तआला ने अपनी राह में ख़र्च करने वालों से बड़े प्रतिफल का वादा किया है।

इसी प्रकार अल्लाह तआला फरमाता है

وَ مَا لَکُمۡ اَلَّا تُنۡفِقُوۡا فِیۡ سَبِیۡلِ اللّٰہِ وَ لِلّٰہِ مِیۡرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ۔

(अल-हदीद: 11)

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते, जबकि आकाश और पृथ्वी की विरासत तो अल्लाह ही की है?

अर्थात इस भौतिक संसार में जो कुछ मनुष्य के हाथ में है, अंततः मनुष्य उसे छोड़कर मर जाएगा और वह सब ख़ुदा के अधिकार में आ जाएगा। मनुष्य के हाथ में तो कुछ भी नहीं रहता। विरासत भी बँट जाती है। यदि वारिस सही न हों तो वे उसे नष्ट कर देते हैं। उसके हाथ में न इस संसार में कुछ रहता है और न अगले संसार में। इसलिए पहले ही अल्लाह तआला से डरते हुए उसकी राह में ख़र्च किया जाए, तो अल्लाह तआला उसमें बरकत देता है और आने वाली पीढ़ियों की भी रक्षा करता है।

फिर इसी प्रकार अल्लाह तआला एक और स्थान पर क़ुरआन-ए-करीम में फरमाता है :

فَاتَّقُوا اللّٰہَ مَا اسۡتَطَعۡتُمۡ وَ اسۡمَعُوۡا وَ اَطِیۡعُوۡا وَ اَنۡفِقُوۡا خَیۡرًا لِّاَنۡفُسِکُمۡ وَ مَنۡ یُّوۡقَ شُحَّ نَفۡسِہٖ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ۔ (التغابن:17)

अतः जितना संभव हो, अल्लाह का तक़वा अपनाओ, उसकी बात सुनो, उसकी आज्ञा का पालन करो और अपने धन को उसकी राह में ख़र्च करते रहो। यह तुम्हारी जानों के लिए बेहतर होगा। और जो लोग अपने दिल की कंजूसी से बचा लिए जाते हैं, वही सफल होते हैं।

अतः अल्लाह तआला ने फरमाया कि यह कंजूसी और बख़ीलपन ठीक नहीं है। यदि अल्लाह तआला के फ़ज़्लों का वारिस बनना है, तो उसकी राह में ख़र्च करना पड़ेगा। और इसी प्रकार क़ुरआन-ए-करीम में असंख्य और भी आयतें हैं, जो हमें इस बात की प्रेरणा देती हैं कि हमें अपने धन में से अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करना चाहिए। और इस युग में, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी अनेक बार फरमाया है कि धर्म के प्रचार के लिए, धर्म के कार्यों को फैलाने के लिए, इस्लाम के प्रचार के लिए धन की आवश्यकता है। इसलिए उसमें से तुम्हें ख़र्च करना चाहिए।

फिर यह भी याद रखना चाहिए कि जो लोग धर्म के लिए धन ख़र्च करते हैं जैसा कि मैंने आयत पढ़कर भी बताया उसका लाभ केवल उन्हीं को नहीं होता, बल्कि पूरी क़ौम को लाभ होता है। इसलिए क़ौम की हमदर्दी का भी यही तकाज़ा है और मानवता की हमदर्दी का भी यही तकाज़ा है कि हम अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करें जिसमें से लोगों की मदद के लिए भी ख़र्च हो और इस्लाम के प्रचार के लिए भी ख़र्च हो।

अहादीस में भी इस बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अनेक स्थानों पर हमें यह नसीहत फरमाई है कि आर्थिक क़ुर्बानी करनी चाहिए।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है यह हदीस क़ुदसी है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला के हवाले से फरमाया:

ऐ आदम के बेटे! तू अपना ख़ज़ाना मेरे पास जमा करके निश्चिंत हो जा। न आग लगने का डर, न पानी में डूबने का ख़तरा और न किसी चोर की चोरी का भय। मेरे पास रखा गया ख़ज़ाना मैं पूरा तुझे उस दिन दूँगा, जब तू उसका सबसे अधिक ज़रूरतमंद होगा।

(अल-जामे लि-शुअब अल-ईमान, जिल्द 5, पृष्ठ 45, अल-इस्ना वल-इशरून मिन शुअब अल-ईमान, बाब अत-तहरीज़ अला सदक़ा अत-ततव्वु, हदीस 3071, मक्तबा अर-रुश्द)

अतः यह अल्लाह तआला का वादा है कि यदि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करोगे, तो अल्लाह तआला पूरा का पूरा धन लौटा देगा। क़ुरआन-ए-करीम में भी अल्लाह तआला फरमाता है:

وَ مَا تُنۡفِقُوۡا مِنۡ خَیۡرٍ یُّوَفَّ اِلَیۡکُمۡ وَ اَنۡتُمۡ لَا تُظۡلَمُوۡنَ۔

(अल-बक़रा: 273)

अर्थात जो भी अच्छा धन तुम उसकी राह में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-का-पूरा लौटा दिया जाएगा। बल्कि दूसरी जगह यह भी फरमाया कि उसे कई गुना बढ़ाकर लौटाया जाएगा। यही हैं अल्लाह तआला के देने के तरीक़े, उन लोगों के लिए जो उसकी राह में ख़र्च करते हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि आज जैसा कि मैंने पहले भी कहा अहमदियों की अधिकतर संख्या को इस बात का पूरा एहसास है। वे अल्लाह की राह में बहुत अधिक ख़र्च करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समय में भी इस ख़र्च की ऐसी ही मिसालें मिलती हैं। बल्कि उन्हें देखकर एक बार आपने फरमाया था कि मैं हैरान होता हूँ कि ये लोग जो गरीब भी होते हैं धर्म की ख़ातिर इतनी क़ुर्बानियाँ कैसे कर रहे हैं।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 263 से उद्धृत)

आज भी यही स्थिति है और सामान्यतः अहमदियों की बड़ी संख्या इस बात को समझती है कि अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करना है। उन्हें इसका गहरा एहसास है।

मैंने देखा है कि अक्सर गरीबों में से या मध्यम वर्ग के कमाने वाले लोग बहुत बड़ी-बड़ी क़ुर्बानियाँ करते हैं, क्योंकि उन्हें यह समझ होती है कि अल्लाह तआला यह धन हमें लौटाएगा या हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के वारिस बनेंगे। कैसे? यह अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है इस संसार में भी और अगले संसार में भी।

वास्तविक बात यही है कि अगले संसार में अल्लाह तआला इसे लौटाएगा, इसे उनके पुण्य में शामिल करेगा और ये क़ुर्बानियाँ उनके लिए दर्जों की ऊँचाई का कारण बनेंगी।

फिर एक हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिसने एक खजूर भी पाक कमाई में से अल्लाह की राह में दी और अल्लाह तआला केवल पाक चीज़ ही स्वीकार करता है तो अल्लाह तआला उस खजूर को अपने दाहिने हाथ से स्वीकार करेगा और उसे बढ़ाता चला जाएगा, यहाँ तक कि वह पहाड़ के समान बड़ी हो जाएगी। आपने उदाहरण दी कि जैसे तुम में से कोई अपने छोटे से बछड़े की परवरिश करता है, यहाँ तक कि वह बड़ा जानवर बन जाता है।

(सहीह अल-बुख़ारी, जिल्द 3, पृष्ठ 28-29, किताबुज़्ज़कात, बाब अस्सदक़ा मिन कस्बे तैय्यिब, रिवायत संख्या 1410, प्रकाशित नज़ारत इशाअत रब्वा)

अतः जिस प्रकार छोटा बछड़ा परवरिश पाकर बड़ा होता है, उसी प्रकार तुम्हारा धन भी बढ़ता जाएगा, यदि तुम उसे अल्लाह की राह में दोगे। लेकिन शर्त यह है कि धन पाक हो ऐसा न हो कि गलत तरीक़े से कमाया गया हो या उसे जमा करने में गलत तरीक़े अपनाए गए हों और फिर चंदे में दे दिया जाए। ऐसा नहीं। बल्कि जब धन पाक होगा, तभी अल्लाह तआला उसे स्वीकार करता है।

फिर एक हदीस में आता है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

क़ियामत के दिन हिसाब-किताब समाप्त होने तक अल्लाह की राह में खर्च करने वाला व्यक्ति अपने उसी धन के साए में रहेगा, जो उसने अल्लाह की राह में खर्च किया था।

(मुसनद अहमद बिन हम्बल, जिल्द 5, पृष्ठ 895, मुसनद उक़्बा बिन आमिर, हदीस 17466, मक्तबा आलमुल कुतुब, बैरूत)

अतः क़ियामत के दिन भी आर्थिक क़ुर्बानियाँ बशर्ते कि वे नेक नीयत और पाक धन से की गई हों अल्लाह तआला के फ़ज़्ल को आकर्षित करने वाली होती हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा, जमाअत के सदस्य इस बात को समझते हैं कि जैसे अल्लाह तआला ने फरमाया है तक़वा पर चलने वालों की आर्थिक क़ुर्बानियाँ स्वीकार की जाती हैं और फिर अल्लाह तआला उन्हें असीम अनुग्रह देता है। जमाअत के अधिकांश लोग इस पर अमल करने की कोशिश करते हैं।

अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में एक स्थान पर फरमाता है:

وَمَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۔ وَّیَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ ؕ وَمَنۡ یَّتَوَکَّلۡ عَلَی اللّٰہِ فَہُوَ حَسۡبُہٗ ؕ اِنَّ اللّٰہَ بَالِغُ اَمۡرِہٖ ؕ قَدۡ جَعَلَ اللّٰہُ لِکُلِّ شَیۡءٍ قَدۡرًا ۔(الطلاق :3-4)

कि जो व्यक्ति अल्लाह का तक़वा अपनाएगा, अल्लाह उसके लिए कोई न कोई रास्ता निकाल देगा। और उसे वहाँ से रोज़ी देगा, जहाँ से रोज़ी आने का उसे विचार भी नहीं होगा। और जो कोई अल्लाह पर भरोसा करता है, वह (अल्लाह) उसके लिए काफ़ी है। अल्लाह निश्चय ही अपने उद्देश्य को पूरा करके रहता है। और अल्लाह ने हर चीज़ का एक माप निश्चित कर रखा है और उसी माप के अनुसार देता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हमेशा यह देखना चाहिए कि हमने तक़वा और पवित्रता में कहाँ तक प्रगति की है। इसका मापदंड क़ुरआन है। अल्लाह तआला ने मुत्तकी के चिन्हों में एक यह चिन्ह भी रखा है कि वह मुत्तकी को दुनिया की अप्रिय बातों से मुक्त करके उसके कामों का स्वयं ज़िम्मेदार हो जाता है। जैसे कि फरमाया:

وَ مَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۔ وَّ یَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ

(अत-तलाक: 3-4)

जो व्यक्ति ख़ुदा तआला से डरता है, अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में उसके लिए मुक्ति का रास्ता निकाल देता है।"

अल्लाह तआला की खातिर क़ुर्बानी करने वाले वही लोग हो सकते हैं, जो अल्लाह तआला से डरते हों और उसकी खातिर क़ुर्बानी करते हों। जब वे ऐसा करते हैं तो उन्हें यह चिंता नहीं रहती कि हमारी ज़रूरतें कैसे पूरी होंगी या हमारे खर्च कैसे पूरे होंगे। अल्लाह तआला उनके लिए रास्ते पैदा करता रहता है। आपने फरमाया कि अल्लाह उनके लिए मुक्ति का रास्ता निकाल देता है "और उसके लिए ऐसी रोज़ी के साधन पैदा कर देता है, जिनका उसे ज्ञान और अनुमान भी नहीं होता।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 1, पृष्ठ 10–11, संस्करण 2022)

फिर एक स्थान पर आपने फरमाया कि अल्लाह तआला अपनी खातिर क़ुर्बानी करने वालों और तक़वा पर चलने वालों को विपत्तियों से सुरक्षित रखता है।

आप फरमाते हैं:

"जिनका अल्लाह तआला स्वयं संरक्षक हो जाता है, वे दुनिया के दुखों से मुक्ति पा जाते हैं कठिनाइयों और कष्टों से छुटकारा पा जाते हैं और सच्चे आराम और संतोष के जीवन में प्रवेश कर जाते हैं। उनके लिए अल्लाह तआला का वादा है:

وَ مَنۡ یَّتَّقِ اللّٰہَ یَجۡعَلۡ لَّہٗ مَخۡرَجًا ۔ وَّ یَرۡزُقۡہُ مِنۡ حَیۡثُ لَا یَحۡتَسِبُ

(अत-तलाक: 3–4)

जो व्यक्ति तक़वा अपनाता है, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से उसे हर विपत्ति और कष्ट से निकाल लेता है और उसके रोज़ी का स्वयं ज़िम्मेदार हो जाता है और ऐसे तरीके से देता है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 6, पृष्ठ 217, संस्करण 2022)

फिर इसी प्रकार एक स्थान पर आपने यह भी फरमाया कि भरोसा करने वाले और ख़ुदा तआला की ओर झुकने वाले कभी नष्ट नहीं होते।

आप फरमाते हैं:

"वास्तविक रोज़ी देने वाला ख़ुदा तआला है। जो व्यक्ति उस पर भरोसा करता है, वह कभी रोज़ी से वंचित नहीं रह सकता। वह हर तरह से और हर स्थान से अपने पर भरोसा करने वाले व्यक्ति तक रोज़ी पहुँचाता है अर्थात अल्लाह तआला। ख़ुदा तआला फरमाता है कि जो मुझ पर भरोसा करे और मुझ पर निर्भर रहे, मैं उसके लिए आसमान से बरसाता हूँ और उसके पैरों के नीचे से निकालता हूँ। अतः हर व्यक्ति को ख़ुदा तआला पर भरोसा करना चाहिए।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 9, पृष्ठ 240–241)

इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अनेक स्थानों पर बहुत सी नसीहतें बयान की हैं और इस आयत की व्याख्या भी की है।

अल्लाह तआला का यह विशेष फ़ज़्ल है कि जमाअत के सदस्य इस बात को समझते हैं। वे जमाअत की खातिर क़ुर्बानियाँ भी देते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के दृश्य भी देखते हैं। दुनिया में हर वर्ष असंख्य उदाहरण हमारे सामने आते हैं। चूँकि इस समय मैं वक़्फ़-ए-जदीद के संदर्भ में बात कर रहा हूँ, इसलिए मैं उन लोगों की कुछ मिसालें प्रस्तुत कर देता हूँ जिन्होंने वक़्फ़-ए-जदीद के चंदे दिए और उन पर अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल किए, या उन्हें अल्लाह तआला पर कितना विश्वास था कि यदि वे क़ुर्बानी करेंगे तो अल्लाह तआला उनकी ज़रूरतें पूरी करेगा। और जैसा कि मैंने पहले भी कहा है कि मध्यम स्तर या कम आय वाले लोगों में क़ुर्बानी की भावना बहुत अधिक होती है और सामान्यतः उन्हीं की मिसालें हमारे सामने आती हैं।

इंडोनेशिया की जमाअत पंगिर में वहाँ की एक महिला ताहिरा साहिबा हैं। वे कहती हैं मैं पार्ट-टाइम अध्यापिका थी, वेतन बहुत कम था। वक़्फ़-ए-जदीद के वित्तीय वर्ष के अंत में मुझे राष्ट्रीय सचिव साहिब का संदेश मिला कि मेरा एक लाख तीस हज़ार रुपया का वादा अभी बाकी है। मेरे पास केवल उतनी ही राशि थी, जो मैंने छोटा सा व्यवसाय शुरू करने के लिए रखी हुई थी। मेरे पास उसी के बराबर धन था, पर अपने लिए रखा हुआ था। वे कहती हैं कि मेरे दिल में थोड़ी दुविधा हुई, लेकिन फिर मैंने अल्लाह पर भरोसा किया और वह सारा धन वक़्फ़-ए-जदीद में दे दिया। फिर अल्लाह तआला ने ऐसा किया कि अप्रत्याशित रूप से मुझे स्कूल की ओर से बोनस मिल गया, जिसकी मुझे बहुत आवश्यकता थी। साथ ही यह शुभ समाचार भी मिला कि मेरा नाम सरकार की ओर से सब्सिडी पाने वालों में शामिल कर लिया गया है। वे कहती हैं मैं अभी अल्लाह तआला का ठीक तरह धन्यवाद भी नहीं कर पाई थी कि उसी दौरान मेरा टीचर रजिस्ट्रेशन नंबर भी जारी हो गया, जिसका मैं वर्षों से इंतज़ार कर रही थी। वे कहती हैं मुझे विश्वास है कि अल्लाह तआला का यह फ़ज़्ल मेरे इस चंदे की अदायगी की वजह से हुआ।

फिर केन्या जो पूर्वी अफ्रीका का एक देश है। इंडोनेशिया और केन्या के बीच हज़ारों मील का फ़ासला है, लेकिन हर जगह लोगों की सोच कैसी है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल कैसे हैं अल्लाह तआला किस तरह उन्हें भी नवाज़ता है।

केन्या के अमीर साहिब ने एक घटना लिखी कि एक मुअल्लिम ने उन्हें एक महिला का हाल बताया, जो बहुत नियमित रूप से चंदे अदा करती हैं। उनकी कोई विशेष आय नहीं है, फिर भी चंदों के मामले में बहुत दृढ़ हैं। ऐसी स्थिति में पता चलता है कि आवश्यकता कितनी होती है और धन से कितनी मोहब्बत होती है या होनी चाहिए, लेकिन उस समय अल्लाह की राह में धन निकालना वास्तव में दिल निकालने या कलेजा निकालने के बराबर होता है, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया है।

वे लिखते हैं कि इस वर्ष उनका वक़्फ़-ए-जदीद का वादा चार सौ शिलिंग था, जो उन्होंने अदा कर दिया। उन्होंने कहा मेरे पास केवल यही धन था, अब मैं बिल्कुल खाली हाथ हो गई हूँ। जो कुछ था, मैंने दे दिया। मगर अल्लाह तआला ने कैसा व्यवहार किया! अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं ऐसी जगहों से रोज़ी देता हूँ, जहाँ से तुम सोच भी नहीं सकते। उन्हें अल्लाह तआला ने खाली हाथ नहीं छोड़ा। जब उन्होंने कहा कि मैं खाली हाथ हो गई हूँ, तो अल्लाह तआला ने कहा मैं तुम्हें खाली हाथ नहीं छोड़ूँगा। कुछ दिनों बाद उन्हें उनकी बेटी की ओर से चौदह सौ शिलिंग मिले, इस स्पष्टीकरण के साथ कि इस राशि में से आप चंदा अदा करके बाकी अपने खर्च पूरे कर लें। इसके बाद उनके दामाद ने फ़ोन किया। वहाँ यह रिवाज है कि विवाह के बाद बेटी का महर माता-पिता को मिलता है। उसने महर के रूप में दो गायें भेजीं, जिनकी कीमत नब्बे हज़ार शिलिंग थी। केवल यही नहीं हुआ। वे कहती हैं मैंने तो चार सौ शिलिंग दिए थे, लेकिन अल्लाह तआला ने असंख्य और असाधारण रूप से नवाज़ा, और ऐसी जगह से नवाज़ा जहाँ से मुझे कोई उम्मीद भी नहीं थी। फिर अप्रत्याशित रूप से रिश्तेदारों और अन्य बच्चों की ओर से भी उन्हें उपहार और जीवन की आवश्यकताओं के लिए धन मिलने लगा। इस पर उन्होंने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया और उनका पूरा विश्वास हो गया कि ये चंदे की बरकतें थीं।

चंदों की अदायगी से एक ओर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल उतरते हैं और साथ ही अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को देखकर लोगों के ईमान में भी वृद्धि होती है।

गिनी (कोनाक्री) अफ्रीका का एक और देश है। वहाँ के मुबल्लिग लिखते हैं कि

कुंडिया रीजन का एक गाँव है। वहाँ एक अहमदी महिला हैं। उन्होंने इस साल अपना वादा एक लाख पचास हज़ार गिनी फ्रैंक लिखवाया था। सुनने में तो यह लाखों लगता है, लेकिन वहाँ रकम की कीमत बहुत कम होती है, इसलिए यह बहुत मामूली राशि है।

बहरहाल, कहते हैं कि जब साल के अंत में हमारे लोकल मिशनरी उनके गाँव चंदे की वसूली के लिए गए तो वह सब्ज़ी बेचने बाज़ार गई हुई थीं। समय कम था, तो जो मुअल्लिम थे वे बाज़ार में ही उनके पास चले गए और उन्हें बताया कि तुम्हारा यह चंदा बाकी है, जिसमें से तुमने वादा लिखवाया था। महिला ने बहुत दुःख से कहा कि इस समय उसके पास अदा करने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि आप लोग फिलहाल चले जाएँ और मैं इन शा अल्लाह अदा कर दूँगी।

अब देखें, यह एक महिला जो ईमान लाई है, इस्लाम और अहमदियत को स्वीकार किया है, तो ईमान में किस तरह तरक्क़ी हुई है। यह नहीं कि टाल दिया कि जाओ, इस समय नहीं दे सकती, बल्कि कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है, मैं जल्दी इंतज़ाम करके आपको पहुँचा दूँगी। बहरहाल, हमारे मुबल्लिग वहाँ से चले गए। वहाँ से अगले गाँव गए और जब वापस आए तो फिर उस महिला के पास पहुँचे।

उसने एक लाख फ्रैंक पेश किए और कहने लगी कि आज मेरे पूरे दिन की कमाई यही रकम है, जो मैं अल्लाह तआला की राह में पेश करती हूँ। कहती हैं कि कई दिनों से हमारे घर में अच्छा खाना नहीं पका था। सामान्य सा साधारण खाना बच्चों को खिला देती थी। आज मेरा इरादा था कि जो कुछ कमाऊँगी उससे बच्चों को अच्छा खाना खिलाऊँगी। लेकिन जैसा कि आपने भी कहा है और मेरा भी अनुभव है कि अल्लाह तआला की राह में प्रिय धन में से दी गई क़ुर्बानी व्यर्थ नहीं जाती। अल्लाह तआला ऐसी जगहों से देता है कि इंसान कल्पना भी नहीं कर सकता। इसलिए मैंने सोचा कि मेरी क़ुर्बानी व्यर्थ नहीं होगी और आज मैं यह पूरी अदायगी कर रही हूँ।

लोकल मिशनरी कहते हैं कि वे वहीं खड़े थे कि उसी दौरान उस महिला को उसके बेटे का फोन आया कि मेरे पास कुछ चीज़ें हैं आपको देने के लिए, आप फलाँ जगह आकर ले जाएँ। जब वह अपने बेटे से मिलने गई तो बेटे ने उन्हें पाँच लाख फ्रैंक दिए और कहा कि यह घर के खर्च के लिए हैं। महिला खुशी-खुशी वापस आई और यह बात बताने लगीं कि तभी दोबारा फोन की घंटी बजी। दूसरे बेटे ने, जो दूसरे शहर में रहता था, कहा कि मैं यहीं पास में खड़ा हूँ और कहीं जा रहा हूँ, इसलिए आ नहीं सकता, आप मेरे पास आ जाएँ, मेरे पास आपके लिए एक उपहार है। जब वह उससे मिलने गईं तो उसने भी तीन लाख फ्रैंक अपनी माँ को दिए कि यह घर के खर्च के लिए हैं।

महिला ने लौटकर बताया और कहा कि यह केवल मुझ पर अल्लाह तआला का अनुग्रह ही नहीं हुआ, बल्कि मेरे ईमान में भी वृद्धि हुई है और मेरा विश्वास मज़बूत हुआ है कि अल्लाह तआला ने किस तरह जमाअत की ख़ातिर क़ुर्बानी करने की वजह से मुझे नवाज़ा है। मैं इससे समझती हूँ कि जमाअत निश्चित रूप से सत्य पर है। अल्लाह तआला ईमानों को भी मज़बूत करता है और अल्लाह तआला की राह में हम जो क़ुर्बानी कर रहे हैं, वह उसकी नज़र में अवश्य स्वीकार है। कहती हैं, मैंने तो एक लाख दिया था, अल्लाह तआला ने मुझे बढ़ाकर कई गुना दे दिया।

फिर कज़ाख़स्तान के शहर अक्ताउ के एक सच्चे दोस्त अली बेक साहब का वाक़या है। वे चंदा देने में बहुत नियमित हैं। हर महीने समय पर चंदा अदा करते हैं। कुछ समय से मजबूरी की वजह से चंदा नहीं दे पा रहे थे, यहाँ तक कि अनिवार्य चंदा और वक़्फ़-ए-जदीद का साल समाप्त होने पर उसका चंदा भी अदा नहीं कर सके। बहुत परेशान थे।

एक दिन जुमा की नमाज़ के बाद खुद ही कहने लगे कि कर्ज़ बहुत बढ़ गया है, जिसकी वजह से बैंक ने खाता ही बंद कर दिया था और इसी कारण मैं चंदा भी नहीं दे पा रहा था। दुआ कर रहा था कि अल्लाह तआला कृपा करे। कहते हैं कि एक दिन जिस कंपनी में काम करता हूँ, उसके अधिकारी ने हमें एक अच्छी रकम बोनस के रूप में दी, जिसका हम एक साल से इंतज़ार कर रहे थे, लेकिन उसके मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। बहरहाल रकम मिल गई और अल्लाह तआला के अनुग्रह से कर्ज़ भी उतर गया और चंदे का बकाया भी अदा कर दिया। अली बेक साहब कहते हैं कि मुझे पूरा विश्वास है कि यह अनुग्रह केवल इसलिए हुआ कि मैं अपना चंदा अदा कर सकूँ।

अल्लाह तआला के उधार न रखने और अप्रत्याशित रूप से देने का एक और वाक़या ऑस्ट्रेलिया के अमीर साहब ने लिखा है। अमीर साहब कहते हैं कि गोल्ड कोस्ट के एक दोस्त हैं, जिन्होंने अपना वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा एक हज़ार डॉलर अदा कर दिया था। मैंने उन्हें ध्यान दिलाया और कहा कि इस तहरीक में और अधिक आर्थिक क़ुर्बानी पेश करें। सामान्यतः मध्यम स्तर के सम्पन्न लोग भी इतनी क़ुर्बानी नहीं करते, लेकिन कुछ ऐसे भी होते हैं जो करते हैं, जैसे उन्होंने की।

इस दोस्त ने एक हज़ार डॉलर का वादा किया था और अदा भी कर दिया था। जब उन्हें और क़ुर्बानी की ओर ध्यान दिलाया गया तो उन्होंने छह हज़ार डॉलर और पेश कर दिए। इस तरह कुल सात हज़ार डॉलर अदा कर दिए। अगले ही दिन उनकी कॉल आई और बताया कि मेरी पत्नी को इंश्योरेंस कंपनी की ओर से फोन आया है कि एक इंश्योरेंस क्लेम, जिसका हमें पहले पता भी नहीं था, मिल गया है और हमें बारह हज़ार डॉलर रिफंड के रूप में मिले हैं। वह दोस्त कहते हैं कि मैंने छह हज़ार की क़ुर्बानी की थी, अल्लाह तआला ने दो दिन में ही दोगुनी करके लौटा दी, और ऐसे माध्यम से लौटाई जहाँ से कोई उम्मीद नहीं थी।

फिर गिनी-बिसाऊ के मुबल्लिग अल्लाह की अप्रत्याशित सहायता का एक और दृश्य बताते हैं कि एक सच्चे अहमदी अबू सानिया साहब देश से बाहर थे। बहुत समय बीतने के बाद भी उन्हें कोई उचित नौकरी नहीं मिल रही थी, जिससे वे आर्थिक दबाव में थे। परदेस में इंसान हो, नौकरी न हो और आर्थिक दबाव हो तो उसकी क्या हालत होती है? ऐसे समय यदि उसके हाथ में कुछ धन आए तो वह सबसे प्रिय होता है और वह उसे अपने ऊपर खर्च करता है।

लेकिन इन सच्चे लोगों की हालत देखें। उसी दौरान जमाअत की ओर से चंदे की तहरीक की गई। इस तहरीक पर उत्तर देते हुए अबू सानिया ने अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बानी पेश की और जो कुछ था दे दिया। हालाँकि उस समय उनके पास बड़ी रकम नहीं थी, लेकिन वही उनके लिए सबसे प्रिय थी और उन्होंने उसे अल्लाह के रास्ते में दे दिया।

अल्लाह तआला ने उनकी क़ुर्बानी बहुत जल्दी स्वीकार कर ली। चंदा अदा किए अभी एक सप्ताह ही हुआ था कि एक कंपनी की ओर से उन्हें फोन आया कि उन्हें बिना किसी इंटरव्यू के नौकरी पर रखा जा रहा है। उन्होंने आवेदन दिया हुआ था। उनसे कहा गया कि इंटरव्यू की आवश्यकता नहीं, सीधे काम पर आ जाएँ।

अबू सानिया साहब कहते हैं कि यह अल्लाह तआला की राह में की गई क़ुर्बानी की बरकत है और उसकी सहायता के वादे की व्यावहारिक पूर्ति है। अल्लाह तआला बहुत बढ़ाकर देता है और फिर अप्रत्याशित रूप से इस तरह देता है जिसकी उन्हें कल्पना भी नहीं थी।

रूस के मुबल्लिग इंचार्ज लिखते हैं कि इकराम जान साहब एक सच्चे और निष्ठावान दोस्त हैं। वे कहते हैं कि पिछले महीने उन्होंने अपना चंदा भेजा और बड़े भावुक अंदाज़ में बताया कि पिछले दो महीनों से चंदा अदा नहीं कर सका था और बहुत चिंतित था कि मैं ख़ुदा तआला की राह में क़ुर्बानी से वंचित रह रहा हूँ। अब देखिए, ये नए अहमदी हैं, दूर-दराज़ इलाकों में रहने वाले हैं, लेकिन कितनी चिंता है कि हमें आर्थिक क़ुर्बानियाँ करनी हैं, क्योंकि उन्हें विश्वास है कि इसी से हम पर अल्लाह तआला के अनुग्रह होंगे। कहते हैं कि मैं बहुत दुआ कर रहा था। लोग अपने व्यापारों के लिए दुआ करते हैं, लेकिन अगर इन्हें चिंता थी, धन की चिंता थी, तो इसलिए थी कि मैं चंदा अदा कर सकूँ। बहरहाल, कहते हैं कि मैंने बहुत दुआ की कि अल्लाह तआला मेरी सहायता करे ताकि मैं इस सौभाग्य से पीछे न रह जाऊँ और अल्लाह की राह में क़ुर्बानी करने से वंचित न रह जाऊँ। एक दिन दफ़्तर जाते समय रास्ते में फिर ख़ुदा के सामने बहुत दुआ की कि मेरी तनख़्वाह मुझे जल्दी मिल जाए ताकि मैं चंदा अदा कर सकूँ। वहाँ हालात भी ऐसे हैं कि तनख़्वाहें भी रुक जाती हैं। बहरहाल, कहते हैं दफ़्तर पहुँचा तो अप्रत्याशित रूप से उसी दिन मुझे तनख़्वाह मिल गई और मैंने तुरंत अपना चंदा अदा कर दिया और ख़ुदा तआला का शुक्र अदा किया कि मैं क़ुर्बानी से वंचित नहीं रहा।

भारत से वहाँ के इंस्पेक्टर वक़्फ़-ए-जदीद लिखते हैं कि एक जमाअत जकोर में एक साहब हैं। वे उनके पास गए। उनका सोलह हज़ार रुपये वक़्फ़-ए-जदीद का

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY

थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान

सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल, बलगम इत्यादि) कंप्यूटराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।

हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा

और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा

फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

चंदा बाकी था। उन्हें अपनी एक बहुत ज़रूरी किस्त किसी काम के लिए अदा करनी थी, जिसके लिए उन्होंने यह रकम रखी हुई थी। हमारे पहुँचने पर उन्होंने कहा कि मुझे अपनी ईएमआई की जो किस्त देनी है, वह तो देखी जाएगी, उसे बाद में दे दूँगा। अब चूँकि मेरा चंदा बाकी है और आप लोग मेरे पास आ भी गए हैं, तो पहले मैं आपको चंदे का बकाया अदा करता हूँ। हमने उनसे कहा कि आप कठिन हालात में हैं, इस समय आधा दे दें, बाकी बाद में दे दें। उन्होंने जवाब दिया कि पहले अल्लाह तआला के लिए निकालना है, बाकी काम अल्लाह तआला बेहतर कर देगा, इन शा अल्लाह। अगर मैं तक़्वा से काम ले रहा हूँ और अल्लाह पर भरोसा कर रहा हूँ, तो अल्लाह तआला बेहतर साधन पैदा कर देगा। बाद में उन्होंने फोन पर सूचना दी कि एक रकम जो काफ़ी समय से रुकी हुई थी और उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी मिल जाएगी, वह अचानक मिल गई। इस तरह अल्लाह तआला ने चंदे की बरकत से सारे काम पूरे कर दिए। मेरे ईमान में भी वृद्धि हुई और मैंने देखा कि क़ुर्बानी करने वालों के साथ अल्लाह तआला कैसा व्यवहार करता है।

ग्वाडेलूप दक्षिण अमेरिका का एक देश है। वहाँ एक युवा नवबैअत जर्मी डेडन्स (Jermy Dedans) हैं। उनकी उम्र अट्ठाईस साल है। अभी विद्यार्थी हैं। पढ़ाई के साथ पार्ट-टाइम काम भी करते हैं। गरीब देश है। उन्हें वक़्फ़-ए-जदीद की महत्ता और बरकतों से अवगत कराया गया। सामान्यतः यही कहा जाता है कि जो नवबैअत हों, उन्हें चंदे की आदत डालने के लिए वक़्फ़-ए-जदीद और तहरीक-ए-जदीद में शामिल किया जाए, उसकी ओर ध्यान दिलाया जाए। जब उन्हें बताया गया तो वे कहने लगे कि मेरी इच्छा है कि मैं इसमें शामिल हो जाऊँ, लेकिन अभी मेरे पास बिल्कुल पैसे नहीं हैं और यह भी नहीं जानता कि महीना कैसे गुज़रेगा। ऐसी स्थिति में इच्छा रखना, जबकि हाथ में कुछ भी न हो और पता भी न हो कि महीना कैसे गुज़रेगा, बहुत कठिन काम है। और अगर आदमी के पास पैसा आ जाए तो पहले अपने ऊपर खर्च करता है, लेकिन ईमान लाने के बाद इन लोगों के अद्भुत व्यवहार हैं।

मुबल्लिग ने उनसे कहा कि आप विद्यार्थी हैं, बड़ी क़ुर्बानी की आवश्यकता नहीं है। एक या दो यूरो दे दें, जितनी आपकी सामर्थ्य है। अल्लाह तआला तो नीयत के अनुसार सवाब देता है। कहते हैं कि एक सप्ताह बाद वे मिशन हाउस आए और एक सौ साठ यूरो वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर दिया। कहने लगे कि जिस दिन वक़्फ़-ए-जदीद की क़ुर्बानी का इरादा किया था, उसी सप्ताह अल्लाह तआला ने मेरे धन में बरकत डाल दी। जहाँ मैं पार्ट-टाइम काम कर रहा था, उन्होंने मुझे मेरी तनख़्वाह समय से पहले दे दी और अधिक भी दे दी। बिना किसी कारण अधिक दे दी। कहते हैं मुझे खुद समझ नहीं आया कि क्यों अधिक दी। फिर कुछ दिन बाद बताया कि एक और चमत्कार हुआ है। कहते हैं जिस दिन मैंने एक सौ साठ यूरो अदा किए तो मेरी इच्छा थी कि और अदा करूँ, लेकिन गुंजाइश नहीं थी। लेकिन चंदा देने के कुछ दिन बाद ही अप्रत्याशित रूप से अच्छी रकम मिल गई। मुझे एक ट्रेनिंग सेंटर से कुछ पैसे लेने थे, जो कई बार कहने के बावजूद नहीं मिल रहे थे, लेकिन अल्लाह तआला ने चंदे की बरकत से वह रकम भी दिला दी। इस प्रकार उन्होंने और एक सौ चालीस यूरो वक़्फ़-ए-जदीद में अदा कर दिए। कहाँ तो यह हालत थी कि कठिनाई में जीवन गुज़र रहा था, और कहाँ यह कि तीन सौ यूरो चंदा भी दे दिया।

इसी तरह और भी बहुत से घटनाएँ हैं। कुछ लोगों को असाधारण रूप से बड़ी रकम मिल गई।

किर्गिस्तान की जमाअत से यूलिया गोवानोवा (Yulia Govanova) साहिबा कहती हैं कि जहाँ मैं काम करती हूँ, मैंने उनसे पूछा कि क्या मेरी तनख़्वाह में वृद्धि संभव है? तो उन्होंने बताया कि केवल बोनस के रूप में संभव है और यह भी पता नहीं कि बोनस कितना मिलेगा। बहरहाल, कहती हैं कि अक्तूबर के महीने में जैसे ही मुझे तनख़्वाह का कुछ हिस्सा मिला, तो सबसे पहले मैंने अपना वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर दिया, हालाँकि हमारे अपने बहुत अधिक खर्च थे। यहीं अल्लाह तआला के वादे की निशानी भी मिलती है कि असली क़ुर्बानी यही है और अल्लाह तआला के वादे की निशानी है कि जिस चीज़ को तुम प्रिय रखते हो, उसे अल्लाह की राह में खर्च करो। उस समय यह रकम उन्हें प्रिय थी क्योंकि उसकी उन्हें आवश्यकता थी और बहुत खर्च थे, लेकिन कहती हैं कि सबसे पहले मेरे लिए ज़रूरी था कि जमाअत से किया हुआ वादा पूरा करूँ।

ठीक उसी महीने के अंत में मुझे बताया गया कि मेरी तनख़्वाह में चालीस प्रतिशत वृद्धि हो गई है और इसके अतिरिक्त काम की गुणवत्ता के आधार पर मुझे अतिरिक्त बोनस भी मिल सकता है। मैं बहुत हैरान हुई, क्योंकि मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी कि तनख़्वाह में इतना अधिक बढ़ा सकते हैं। एक दिन पहले ही खर्चों का हिसाब करते हुए मैंने महसूस किया था कि तनख़्वाह में लगभग इतनी ही अतिरिक्त रकम होना ज़रूरी है, जो मुझे मिल गई। मैं पहले ही वक़्फ़-ए-जदीद का चंदा अदा कर चुकी थी, लेकिन खर्चों में जो कमी आ रही थी, वह इस वृद्धि से पूरी हो गई। कहती हैं कि मैं अल्लाह तआला का बहुत शुक्र अदा करती हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि यह जो असाधारण अनुग्रह हुआ, जो अप्रत्याशित था, वह चंदे की बरकत से हुआ। कहती हैं कि मैं एक और बात भी बता दूँ कि मेरा एक और व्यवसाय था, जिसे मैं कुछ समय से चला रही थी, लेकिन उसमें कोई प्रगति नहीं हो रही थी। लेकिन इस साल नवंबर में, जब मैंने अपना वादा अदा किया, तो वादा पूरा करने के बाद दिसंबर में उस व्यवसाय में मेरा लाभ दोगुना हो गया।

इसी तरह इंडोनेशिया से बांडुंग जमाअत की एक सदस्य रहमा साहिबा हैं। वे इंडोनेशिया की राष्ट्रीय मीडिया में फ्रीलांस राइटर हैं। शिक्षित महिला हैं। कहती हैं कि इसी काम से मैं अपनी ज़रूरतें पूरी करती हूँ। इस वर्ष लेखों के अस्वीकार होने और पुस्तकों की कम बिक्री के कारण मैं अपना वक़्फ़-ए-जदीद का वादा पूरा नहीं कर सकी, जिस कारण मैं बहुत बेचैनी और चिंता में थी। मैंने अल्लाह पर भरोसा करते हुए अपनी जमा पूँजी में से कुछ बकाया अदा किए और अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! सब कुछ तेरा ही है, तू मेरे दिल से यह चिंता दूर कर दे कि खर्च कैसे पूरे होंगे। अभी मैंने नमाज़ पढ़ने के बाद जाए-नमाज़ भी नहीं समेटी थी कि एक मित्र का फ़ोन आया, जिसे अर्जेंट अनुवाद के लिए मेरी मदद चाहिए थी। काम पूरा होने पर उस मित्र ने मुझे एक लिफ़ाफ़ा दिया, जिसमें उतनी ही रकम थी जितनी मुझे वक़्फ़-ए-जदीद का वादा पूरा करने के लिए चाहिए थी। मैंने उसी समय वह रकम वक़्फ़-ए-जदीद में अदा कर दी। फिर अल्लाह तआला का अनुग्रह इस तरह हुआ कि जो एक पुस्तक मैंने लिखी थी, उसके बारे में मुझे संपादक का संदेश मिला कि मेरी पुस्तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कर ली गई है, और अब मुझे दस प्रतिशत की जगह तीस प्रतिशत रॉयल्टी मिलेगी। फिर अल्लाह तआला ने मेरी क़ुर्बानी की बरकत से मेरे बेटे के लिए मेडिकल कॉलेज में प्रवेश का मार्ग भी आसान कर दिया, जो दिखने में असंभव था। वे कहती हैं कि मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब से मैंने अपनी आय में से सबसे पहले चंदों की रकम अलग करना शुरू की है, अल्लाह तआला मेरे सभी सांसारिक काम स्वयं ही हल करता चला जाता है।

यह अल्लाह तआला का वादा है, जिसे वह किस प्रकार पूरा करता है।

अब मैं कुछ घटनाएँ छोड़ता हूँ और वक़्फ़-ए-जदीद की इस वर्ष की कार्य-रिपोर्ट बयान कर देता हूँ, अर्थात जमाअतों की ओर से जो वसूली की रिपोर्टें आई हैं। यद्यपि रिपोर्टें पूरी नहीं होतीं। आजकल के हालात के अनुसार विशेषकर अफ़्रीका से पूरी रिपोर्टें नहीं आ पातीं, फिर भी जो आई हैं, वे प्रस्तुत कर देता हूँ।

वक़्फ़-ए-जदीद का यह उनहत्तरवाँ (69वाँ) वर्ष है। अड़सठवाँ (68वाँ) वर्ष समाप्त हुआ और नया वर्ष शुरू हुआ है। अल्लाह तआला के अनुग्रह से लगभग 14.97 मिलियन या लगभग पंद्रह मिलियन पाउंड की राशि लोगों ने क़ुर्बानी के रूप में दी है। पिछले वर्ष की तुलना में यह 1.3 मिलियन पाउंड अधिक है, अल्हम्दुलिल्लाह।

कनाडा और ब्रिटेन क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर हैं।

ब्रिटेन ने इस वर्ष कुल मिलाकर पहला स्थान प्राप्त किया है, लेकिन कनाडा ने बहुत प्रयास किया है और लगभग ब्रिटेन के बराबर पहुँच गया है और इस वर्ष दूसरे स्थान पर आया है।

तीसरे स्थान पर जर्मनी है। चौथे स्थान पर अमेरिका है। पाँचवें स्थान पर भारत।

फिर ऑस्ट्रेलिया। फिर मध्य-पूर्व की एक जमाअत।

फिर इंडोनेशिया। फिर मध्य-पूर्व की एक जमाअत। और दसवें स्थान पर बेल्जियम है।

अफ़्रीका में कुल वसूली के अनुसार पहली दस पोज़ीशन पर आने वाले देशों के नाम क्रम से इस प्रकार हैं:

घाना पहले स्थान पर, फिर मॉरीशस, बुर्किना फासो, तंज़ानिया, नाइजीरिया, लाइबेरिया, गाम्बिया, सिएरा लियोन, बेनिन, और माली।

अल्लाह तआला के अनुग्रह से शामिल होने वालों की संख्या भी पंद्रह लाख से अधिक है।

इसमें अधिक प्रयास करने वालों में नाइजीरिया, नाइजर, गाम्बिया, गिनी बिसाउ, कांगो ब्राज़ाविल, आइवरी कोस्ट, मध्य अफ़्रीकी गणराज्य, कांगो किंशासा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने लोगों को शामिल करने में बहुत प्रयास किया है।

कुल वसूली के अनुसार ब्रिटेन की दस बड़ी जमाअतों में क्रम इस प्रकार है:

इस्लामाबाद नंबर एक, वूस्टर पार्क नंबर दो, ऐश नंबर तीन, वालसाल, एल्डरशॉट साउथ, फार्नहम नॉर्थ, बॉर्डन, फार्नहम साउथ, गिलिंघम, एल्डरशॉट नॉर्थ।

पाँच रीजन में भी नंबर एक इस्लामाबाद है, फिर बैतुल फ़ुतूह मस्जिद, फिर

मस्जिद फ़ज़्ल, फिर बैतुल एहसान मस्जिद, फिर वेस्ट मिडलैंड्स।

दफ़्तर अतफ़ाल में, अलग हिसाब के अनुसार:

एल्डरशॉट साउथ नंबर एक, एल्डरशॉट नॉर्थ, बॉर्डन, ऐश, चीम साउथ, फार्नहम साउथ, इस्लामाबाद, रोहैम्पटन वेल, मिचम पार्क, वालसाल।

कुल पोज़ीशन में नंबर दो कनाडा था। कनाडा की जमाअतों में:

वॉन नंबर एक, पीस विलेज, कैलगरी, ब्रैम्पटन वेस्ट, वैंकूवर, टोरंटो वेस्ट, मिसिसॉगा, ब्रैम्पटन ईस्ट, टोरंटो। कनाडा की दस बड़ी जमाअतों में: हैमिल्टन नंबर एक, एडमंटन वेस्ट, हदीका अहमद, हैमिल्टन माउंटेन, ओटावा वेस्ट, रेजाइना, एयरड्री, इनिसफिल, वॉद्रेय, सडबरी।

अतफ़ाल में प्रमुख अमारतें: वॉन, टोरंटो वेस्ट, पीस विलेज, कैलगरी, ब्रैम्पटन वेस्ट, ब्रैम्पटन ईस्ट, वैंकूवर, मिसिसॉगा, टोरंटो।

अतफ़ाल में प्रमुख जमाअतें:

हदीका अहमद नंबर एक, लंदन साउथ, हैमिल्टन, इनिसफिल, मॉन्ट्रियल वेस्ट, बैतुल एहसान, सास्काटून साउथ वेस्ट, डरहम ईस्ट, वुडस्टॉक, एबॉट्सफोर्ड, बर्लिंगटन।

जर्मनी की पाँच स्थानीय जमाअतों में:

हैम्बर्ग नंबर एक, फ्रैंकफर्ट नंबर दो, वीसबाडेन, रीडश्टाट, ग्रॉस गेराउ।

दस जमाअतें:

रोडगाउ, निद्दा, नॉयविड, रोडरमार्क, वाइनगार्टन, फ्लोर्सहाइम, बर्लिन, कोब्लेंज़, महदी आबाद, पिन्नेबर्ग।

अतफ़ाल में पाँच रीजन:

वीसबाडेन नंबर एक, हैम्बर्ग, हेसन साउथ ईस्ट, मैनहाइम, वेस्टफालेन।

इसी प्रकार इंडोनेशिया से बांडुंग (Bandung) जमात की एक सदस्य रहमा साहिबा हैं। वह इंडोनेशिया के राष्ट्रीय मीडिया में फ्रीलांस लेखिका हैं। पढ़ी-लिखी महिला हैं। कहती हैं कि इसी काम से मैं अपनी ज़रूरतें पूरी करती हूँ। इस साल लेखों के अस्वीकृत होने और पुस्तकों की कम बिक्री के कारण मैं अपना वक्फ़-ए-जदीद का वादा पूरा नहीं कर सकी, जिस पर मैं बहुत बेचैन और चिंतित थी। मैंने ख़ुदा पर भरोसा करते हुए अपनी जमा पूँजी में से कुछ बकाया राशि अदा की और ख़ुदा तआला से प्रार्थना की कि ऐ ख़ुदा! सब कुछ तेरा ही है। तू मेरे दिल से यह चिंता दूर कर दे कि ख़र्च कैसे पूरे होंगे। अभी मैंने नमाज़ पढ़ने के बाद अपनी नमाज़ की चटाई भी नहीं समेटी थी कि एक मित्र का फोन आया, जिसे अर्जेंट (urgent) अनुवाद के लिए मेरी सहायता चाहिए थी। जब काम पूरा हुआ तो उस मित्र ने मुझे एक लिफाफा दिया, जिसमें मौजूद राशि बिल्कुल उतनी ही थी जितनी मुझे वक्फ़-ए-जदीद का वादा पूरा करने के लिए चाहिए थी। मैंने उसी समय वह राशि वक्फ़-ए-जदीद में अदा कर दी। फिर ख़ुदा तआला का अनुग्रह इस प्रकार हुआ कि मैंने जो एक पुस्तक लिखी थी, उसके बारे में मुझे संपादक का संदेश मिला कि मेरी पुस्तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार कर ली गई है और अब मुझे दस प्रतिशत के बजाय तीस प्रतिशत रॉयल्टी मिलेगी। फिर ख़ुदा तआला ने मेरी कुर्बानी की बरकत से मेरे बेटे के लिए मेडिकल कॉलेज में प्रवेश का रास्ता भी आसान कर दिया, जो देखने में असंभव था। वह कहती हैं कि मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि जब से मैंने अपनी आय में से सबसे पहले चंदों की राशि अलग करना शुरू की है, ख़ुदा तआला मेरे सभी दुनियावी काम स्वयं ही हल करता चला जाता है।

यह ख़ुदा तआला का वादा है, जिसे वह इस प्रकार पूरा करता है।

अब मैं कुछ घटनाएँ छोड़कर वक्फ़-ए-जदीद की इस वर्ष की कार्यवाही बता देता हूँ, अर्थात जमातों की ओर से जो वसूली की रिपोर्टें आई हैं, यद्यपि रिपोर्टें पूरी नहीं होतीं। आजकल की परिस्थितियों के अनुसार अफ्रीका में विशेष रूप से वहाँ से पूरी तरह रिपोर्टें नहीं आ सकतीं, लेकिन फिर भी जो आई हैं, वे प्रस्तुत कर देता हूँ।

वक्फ़-ए-जदीद का यह उनहत्तरवाँ (69) वर्ष है। अड़सठवाँ (68) वर्ष समाप्त हुआ और नया वर्ष आरंभ हुआ है। ख़ुदा तआला के अनुग्रह से लगभग 14 दशमलव नौ सात (97) मिलियन या लगभग पंद्रह मिलियन पाउंड की राशि लोगों ने कुर्बानी के रूप में दी है। पिछले वर्ष की तुलना में यह एक दशमलव तीन मिलियन पाउंड अधिक है, अल्हम्दुलिल्लाह।

कनाडा और ब्रिटेन क्रमशः प्रथम और द्वितीय हैं।

ब्रिटेन ने इस वर्ष कुल मिलाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया है, लेकिन कनाडा ने बहुत प्रयास किया है और लगभग ब्रिटेन के निकट पहुँच गए हैं और इस वर्ष दूसरे स्थान पर आए हैं। तीसरे स्थान पर जर्मनी है। चौथे पर अमेरिका है। पाँचवें पर भारत। फिर ऑस्ट्रेलिया। फिर मिडल ईस्ट की एक जमात है। फिर इंडोनेशिया है। फिर मिडल ईस्ट की एक जमात है। और दसवें स्थान पर बेल्जियम है।

अफ्रीका में कुल वसूली के अनुसार जो पहली दस जमातें या देश हैं, उनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं: घाना पहले स्थान पर, फिर मॉरीशस, बुर्किना फासो, तंज़ानिया, नाइजीरिया, लाइबेरिया, गाम्बिया, सिएरा लियोन, बेनिन, माली।

ख़ुदा तआला के अनुग्रह से शामिल होने वालों की संख्या भी पंद्रह लाख से अधिक है।

इसमें अधिक प्रयास करने वालों में नाइजीरिया, नाइजर, गाम्बिया, गिनी बिसाऊ, कांगो ब्राज़ाविल, आइवरी कोस्ट, सेंट्रल अफ्रीका, कांगो किंशासा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन्होंने लोगों को शामिल करने में काफी प्रयास किया है।

कुल वसूली के अनुसार ब्रिटेन की दस बड़ी जमातें इस प्रकार हैं:

पहले स्थान पर इस्लामाबाद, दूसरे पर वूस्टर पार्क (Worcester Park), तीसरे पर ऐश (Ash), फिर वाल्साल (Walsall), फिर एल्डरशॉट साउथ (Aldershot South), फार्नहम नॉर्थ (Farnham North), फिर बोर्डन (Bordon), फार्नहम साउथ (Farnham South), गिलिंगहैम (Gillingham), फिर एल्डरशॉट नॉर्थ (Aldershot North)।

पाँच रीजन में भी पहले स्थान पर इस्लामाबाद है, फिर बैतुल फ़ुतूह, फिर मस्जिद फ़ज़्ल, फिर बैतुल एहसान, फिर वेस्ट मिडलैंड्स (West Midlands)।

दफ़्तर अत्फाल का वक्फ़-ए-जदीद का अलग हिसाब होता है। इसमें जो स्थिति आई है, उसमें एल्डरशॉट साउथ पहले स्थान पर है, फिर एल्डरशॉट नॉर्थ, फिर बोर्डन, फिर ऐश, चीयम साउथ (Cheam South), फार्नहम साउथ, इस्लामाबाद, रोहेम्पटन वेल (Roehampton Vale), मिचम पार्क (Mitcham Park), वाल्साल।

कुल स्थिति में दूसरे स्थान पर कनाडा था। इस अनुसार कनाडा की जमातों में वॉन (Vaughan) पहले स्थान पर है, फिर पीस विलेज (Peace Village), फिर कैलगरी (Calgary), फिर ब्रैम्पटन वेस्ट (Brampton West), वैंकूवर (Vancouver), टोरंटो वेस्ट (Toronto West), मिसिसॉगा (Mississauga), ब्रैम्पटन ईस्ट (Brampton East) और टोरंटो (Toronto)।

कनाडा की दस बड़ी जमातों में हैमिल्टन पहले स्थान पर, फिर एडमंटन वेस्ट (Edmonton West), हदीक़ा अहमद, हैमिल्टन माउंटेन (Hamilton Mountain), ओटावा वेस्ट (Ottawa West), रेजाइना (Regina), एयर्ड्री (Airdrie), इनिसफिल (Innisfil), वॉद्रेय (Vaudreuil) और सडबरी (Sudbury)।

उनके अत्फाल में अमारतों में वॉन पहले स्थान पर है, फिर टोरंटो वेस्ट, फिर पीस विलेज, कैलगरी, ब्रैम्पटन वेस्ट, ब्रैम्पटन ईस्ट, वैंकूवर, मिसिसॉगा, टोरंटो।

और अत्फाल में प्रमुख जमातें हैं: हदीक़ा अहमद पहले स्थान पर, लंदन साउथ (London South), हैमिल्टन, इनिसफिल, मॉन्ट्रियल वेस्ट (Montreal West), बैतुल एहसान, सास्काटून साउथ वेस्ट (Saskatoon South West), डरहम ईस्ट (Durham East), वुडस्टॉक (Woodstock), एबॉट्सफोर्ड (Abbotsford), बर्लिंगटन (Burlington)।

जर्मनी की पाँच लोकल जमातों में हैम्बर्ग (Hamburg) पहले स्थान पर है, फ्रैंकफर्ट (Frankfurt) दूसरे पर, वीसबाडेन (Wiesbaden), फिर रीडश्टाट (Riedstadt), फिर ग्रॉस गेराउ (Gross Gerau)।

और दस जमातें इस प्रकार हैं: रोडगाउ (Rodgau), निड्डा (Nidda), नोए विड (Neuwied), रोएडरमार्क (Rödermark), वाइनगार्टन (Weingarten), फ्लोर्शाइम (Florsheim), बर्लिन (Berlin), कोब्लेंज़ (Koblenz), महदी आबाद, पिन्नेबर्ग (Pinneberg)।

अत्फाल में पाँच रीजन में वीसबाडेन पहले स्थान पर, फिर हैम्बर्ग, हेसन साउथ ईस्ट (Hessen South East), मैनहाइम (Mannheim), वेस्टफालेन (Westfalen)।

अमेरिका की दस जमातों में नॉर्थ वर्जीनिया (North Virginia) पहले स्थान पर, फिर मेरीलैंड (Maryland), फिर लॉस एंजेलिस (Los Angeles), शिकागो (Chicago), सिएटल (Seattle), सिलिकॉन वैली (Silicon Valley), डलास (Dallas), डेट्रॉइट (Detroit), साउथ वर्जीनिया (South Virginia), जॉर्जिया कैरोलाइना (Georgia Carolina)।

अत्फाल में मेरीलैंड पहले स्थान पर, फिर ऑलबनी (Albany), लॉस एंजेलिस, नॉर्थ वर्जीनिया, सिएटल, शिकागो, जॉर्जिया कैरोलाइना, डलास, ओशकोश (Oshkosh), ह्यूस्टन (Houston)।

पाकिस्तान की भी स्थिति है। कुल मिलाकर उसकी स्थिति पाँचवीं बनती है,

क्योंकि वहाँ मुद्रा का मूल्य बहुत कम हो चुका है, लेकिन इसके बावजूद पाकिस्तान में प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद क़ुर्बानियों का स्तर खुदा तआला के अनुग्रह से बहुत ऊँचा हुआ है।

पाकिस्तान में पहले स्थान पर लाहौर है, दूसरे पर रब्वा, तीसरे पर कराची।

और चंदा बालिगान में जिलों की स्थिति क्रम से इस प्रकार है: इस्लामाबाद पहले, फिर फैसलाबाद, फिर रावलपिंडी, गुजरात, सरगोधा, उमरकोट, मुल्तान, नारोवाल, मीरपुर खास, डेरा गाजी खान।

पहली दस जमातों में इस्लामाबाद शहर पहले स्थान पर, फिर टाउनशिप लाहौर, फिर डिफेंस लाहौर, फिर दारुल ज़िक्र लाहौर, समनाबाद लाहौर, अल्लामा इक़बाल टाउन लाहौर, बैतुल फ़ज़्ल फैसलाबाद, मुगलपुरा लाहौर, मुल्तान शहर, दिल्ली गेट लाहौर।

अत्फ़ाल में पाकिस्तान की जमातों की प्रतियोगिता में पहले स्थान पर लाहौर, दूसरे पर रब्वा, तीसरे पर कराची, और जिलों की स्थिति इस प्रकार है: इस्लामाबाद पहले, फैसलाबाद दूसरे, नारोवाल, रावलपिंडी, उमरकोट, सरगोधा, गुजरात, मीरपुर खास, लेह, टोबा टेक सिंह।

भारत के प्रांतों में स्थिति इस प्रकार है: केरल पहले स्थान पर, तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर, तेलंगाना, कर्नाटक, ओडिशा, पंजाब, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश।

और दस जमातों में कोयंबटूर पहले स्थान पर, फिर हैदराबाद, फिर क़ादियान, फिर कालीकट, मेलापालयम (Melapalayam), बेंगलुरु, मंजेरी, कोलकाता, केयरंग, केरोलाई।

वसूली के अनुसार ऑस्ट्रेलिया की दस जमातें हैं: मेलबर्न लैंगवारिन (Melbourne Langwarrin), मार्सडेन पार्क (Marsden Park), कैसल हिल (Castle Hill), मेलबर्न बेरविक (Melbourne Berwick), मेलबर्न क्लाइड (Melbourne Clyde), पेनरिथ (Penrith), पर्थ (Perth), मेलबर्न वेस्ट (Melbourne West), लोगन ईस्ट (Logan East), मेलबर्न ईस्ट (Melbourne East)।

बालिगान में उनकी जमातें इस प्रकार हैं: मेलबर्न लैंगवारिन, मार्सडेन पार्क, कैसल हिल, मेलबर्न बेरविक, मेलबर्न क्लाइड, पेनरिथ, मेलबर्न ईस्ट, पर्थ, मेलबर्न वेस्ट, एडिलेड वेस्ट (Adelaide West)।

अत्फ़ाल में उनकी स्थिति इस प्रकार है: पहले स्थान पर लोगन ईस्ट, फिर मेलबर्न लैंगवारिन, एडिलेड साउथ (Adelaide South), मेलबर्न वेस्ट, लोगन वेस्ट, मेलबर्न बेरविक, कैसल हिल, पर्थ, प्लम्पटन (Plumpton), फिर पेनरिथ।

खुदा तआला इन सभी क़ुर्बानी करने वालों के माल और जान में अत्यधिक बरकत प्रदान करे।

कुछ जमातों के नाम इसलिए पढ़ देता हूँ कि उन्हें यह जानने की इच्छा होती है कि हमारी क्या स्थिति है, इसलिए परंपरा के अनुसार पढ़े जाते हैं।

हज़रत मसीह मऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"मैं निश्चित रूप से समझता हूँ कि बख़ीलपन और ईमान एक ही दिल में इकट्ठे नहीं हो सकते। जो व्यक्ति सच्चे दिल से खुदा तआला पर ईमान लाता है, वह अपना माल केवल उसी को नहीं समझता जो उसके संदूक में बंद है, बल्कि वह खुदा तआला के सभी ख़ज़ानों को अपने ख़ज़ाने समझता है और अम्साक उससे इस प्रकार दूर हो जाता है" अर्थात कंजूसी उससे दूर हो जाती है "जैसे रोशनी से अंधकार दूर हो जाता है।"

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द 3, पृष्ठ 324)

अतः यह खुदा तआला का विशेष अनुग्रह है। हमने अनुभव भी किया है कि खुदा तआला किस प्रकार लोगों को नवाज़ता चला जाता है, क्योंकि वे समझते हैं कि खुदा तआला के पास ही सारे ख़ज़ाने हैं।

हदीस में भी आया है कि खुदा तआला के पास ही सारे ख़ज़ाने हैं। वह अंतिम जगत में उनसे नवाज़ेगा, लेकिन इस संसार में भी नवाज़ता चला जाएगा। यही खुदा तआला ने क़ुरआन करीम में भी फरमाया है।

मनुष्य आश्चर्यचकित रह जाता है कि खुदा तआला किस प्रकार हमें नवाज़ रहा है, और लोग इसका अनुभव भी कर रहे हैं। कुछ घटनाएँ मैंने सुनाई भी हैं। खुदा तआला हमें जहाँ आगे भी आर्थिक क़ुर्बानियों की तौफ़ीक़ देता रहे, वहाँ हमारे ईमान और विश्वास में भी वृद्धि करता चला जाए।

(अल-फ़ज़्ल इंटरनेशनल, 30 जनवरी 2026, पृष्ठ 1 से 8)

★ ★ ★

पृष्ठ 11 का शेष

होता है और उसे अनुग्रह देता है और अपनी शक्ति के प्रदर्शन से उसे ऊँचा उठाता है।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 10, पृष्ठ 206-205, संस्करण 1984)

फिर एक स्थान पर आप फरमाते हैं "नबियों की प्रकृति ही ऐसी होती है कि वे प्रसिद्धि की इच्छा नहीं करते। किसी नबी ने कभी प्रसिद्धि नहीं चाही। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी एकांत और अकेलेपन को ही पसंद करते थे। आप इबादत करने के लिए लोगों से दूर एकांत की गुफा में, जो ग़ार-ए-हिरा थी, चले जाते थे। यह गुफा इतनी भयावह थी कि कोई मनुष्य उसमें जाने का साहस नहीं कर सकता था, लेकिन आपने उसे इसलिए पसंद किया था कि वहाँ डर के कारण कोई पहुँचेगा ही नहीं। आप पूर्ण एकांत चाहते थे। प्रसिद्धि को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे।

लेकिन खुदा तआला का आदेश हुआ

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ. قُمْ فَاَنْذِرْ. (अल-मुद्दस्सिर: 3-2)

कि ऐ कंबल ओढ़ने वाले! उठ और लोगों को सावधान कर।"

इस आदेश में एक प्रकार का बलपूर्वक निर्देश दिखाई देता है और इसी कारण आदेश दिया गया कि जो एकांत आपको बहुत प्रिय था, अब उसे छोड़ दें।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 44, संस्करण 1984)

अतः जब खुदा तआला की मुहब्बत अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गई और आपका संघर्ष भी अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया, तब खुदा तआला ने आपको अपनी अंतिम शरीअत फैलाने के लिए संसार में भेज दिया।

आप फरमाते हैं कि यह खुदा तआला से प्रेम और गहरा लगाव तो था ही, लेकिन एक संघर्ष भी था, जिसके कारण खुदा तआला ने आपको अत्यधिक अनुग्रह प्रदान किया। और हर मनुष्य अपने-अपने स्तर के अनुसार जब तक प्रयास और मेहनत न करे, तब तक खुदा तआला तक पहुँचना कठिन होता है।

खुदा तआला की मुहब्बत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नमाज़ों की यह अवस्था थी कि मुतर्रिफ अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उन्होंने कहा मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया, जबकि आप नमाज़ पढ़ रहे थे। आपके सीने से ऐसी आवाज़ आ रही थी जैसे हाँडी में उबलते पानी की आवाज़ आती है।

(सुनन नसाई, किताब अस-सह्व, बाब नमाज़ में रोना, हदीस 1215)

आप इतने तीव्र भाव से रो रहे थे और विनय कर रहे थे कि ऐसा प्रतीत होता था जैसे हाँडी में पानी उबल रहा हो।

इसी प्रकार एक रिवायत हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं जिसका उल्लेख मैं पिछले एक ख़ुत्बे में कर चुका हूँ कि आप इतनी अधिक इबादत करते और इबादत के समय इतने लंबे समय तक खड़े रहते कि आपके पाँव सूज जाते थे।

(सहीह अल-बुख़ारी, किताब अत-तफ़्सीर, तफ़्सीर सूरह अल-फ़तह, हदीस 4837)

हज़रत मसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और इबादतों का उल्लेख करते हुए एक स्थान पर फरमाते हैं

इसका थोड़ा-सा भाग मैं पहले भी एक ख़ुत्बे में बयान कर चुका हूँ, जहाँ मैंने सीरत का वर्णन किया था, लेकिन इसकी कुछ और विस्तार भी है, जिसे मैं अब बयान करता हूँ। इससे खुदा तआला के साथ आपके प्रेम और लगाव की और अधिक स्पष्टता हो जाती है।

हज़रत मसलह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जब आप अंतिम बीमारी में थे, तो कमजोरी के कारण नमाज़ पढ़ाने में सक्षम नहीं थे। इसलिए आपने हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु को नमाज़ पढ़ाने का आदेश दिया। जब हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने नमाज़ पढ़ाना शुरू किया, तो आपको कुछ आराम महसूस हुआ और आप नमाज़ के लिए निकल पड़े।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि जब आपने बीमारी में कुछ हल्कापन महसूस किया तो आप लोगों के सहारे नमाज़ पढ़ने के लिए निकले। वह दृश्य मेरी आँखों के सामने है कि तीव्र पीड़ा के कारण आपके कदम ज़मीन से घिसटते जा रहे थे। जब आप मस्जिद पहुँचे और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पीछे हटना चाहते थे, तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनके इरादे को भाँप लिया और संकेत किया कि अपनी जगह पर ही रहो। फिर आपको वहाँ लाया गया और आप हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बैठ गए।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस कदर खुदा में लीन और मग्न हो गए थे कि आपकी ज़िन्दगी की हर साँस और आपकी मृत्यु केवल ख़ुदा के लिए हो गई थी। आपके अस्तित्व में न स्वयं का, न सृष्टि का और न साधनों का कोई अंश शेष रहा था, और आपकी आत्मा ख़ुदा के आस्तान पर ऐसे निष्कपट भाव से झुक गई थी कि उसमें किसी अन्य की रत्ती भर भी मिलावट नहीं रही थी।

''(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)''

युवावस्था में और नबूवत के दावे से पहले भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में ख़ुदा की प्रेमाग्नि इतनी प्रबल थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उससे व्याकुल होकर गुफा में चले जाते और अपने प्रिय ख़ुदा से एकान्त में प्रार्थना और संवाद में लगे रहते थे।

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़ुदा तआला से ऐसा गहरा सम्बन्ध था कि जैसे ही ख़ुदा तआला का ज़िक्र होता, आपके भीतर एक विशेष उत्साह उत्पन्न हो जाता था। आपको ख़ुदा तआला से इतनी गहरी मुहब्बत थी कि स्वास्थ्य और बीमारी दोनों अवस्थाओं में ख़ुदा तआला का स्मरण ही आपकी आत्मिक खुराक था। और यही बात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत और अपने लोगों में भी पैदा करना चाहते थे कि उन्हें भी इस आदत की आदत पड़ जाए।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पूरा जीवन इसी प्रयास में बीता कि जिस प्रकार भी सम्भव हो, लोगों की ज़बान पर ख़ुदा का नाम जारी हो जाए।

अब हमें स्वयं को देखना चाहिए, अपना आत्मपरीक्षण करना चाहिए कि क्या हमारे दिल में भी हर समय ख़ुदा तआला का ध्यान रहता है, जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत से चाहते थे?

क्या हमारे दिल में इतना दर्द और लगन है, या हम केवल अपने सांसारिक उद्देश्यों के लिए ही नमाज़ और ख़ुदा तआला के स्मरण की ओर ध्यान देते हैं और सामान्य परिस्थितियों में उसे भूल जाते हैं?

अनेक कर्मों में आपने सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों को ख़ुदा तआला के स्मरण की ओर ध्यान दिलाया है, जिससे स्पष्ट होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम स्वयं भी निरन्तर स्मरण-ए-इलाही में लगे रहते थे और दूसरों से भी चाहते थे कि वे भी ख़ुदा की याद में लगे रहें। यह आपकी पूर्ण प्रेमभावना का प्रमाण है। इसका प्रमाण यह है कि

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ के लिए खड़े होते तो इतनी देर तक खड़े रहते कि आपके पैर या पिंडलियाँ सूज जाती थीं। जब लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहते कि आप ऐसा क्यों करते हैं, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उत्तर देते क्या मैं कृतज्ञ बंदा न बनूँ?

अल्लाह! क्या प्रेम है, कैसी मुहब्बत है, कितना गहरा स्नेह है ख़ुदा तआला की याद में खड़े रहते हैं और अपने तन-मन की सुध ही नहीं रहती।

'قُرَّةُ عَيْنِي فِي الصَّلٰوةِ' नमाज़ में मेरी आँखों की ठंडक रखी गई है। यह भी एक विशेषता है जो इस्लाम को अन्य धर्मों पर प्राप्त है...

रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मुझे ऐसी इबादत प्रदान की गई है जिसमें ही आनंद है, और ऐसा आनंद है जिसका कोई धर्म मुकाबला नहीं कर सकता।''

(मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)

हमारे लेखनी और प्रचार के जिहाद में भी उसी समय बरकत होगी जब हम अपनी इबादत के स्तर को ऊँचा करेंगे और ख़ुदा तआला की मुहब्बत को भी बढ़ाएँगे।

यदि हम चाहते हैं कि इस जिहाद में भाग लें, तो हमें ख़ुदा तआला की मुहब्बत और दुआओं की ओर भी ध्यान देना होगा। अपनी इबादतों की ओर भी विशेष ध्यान देना होगा। और यदि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदर्श का अनुसरण करते हुए ऐसा करेंगे, तभी हमारे कार्यों में बरकत आएगी।

आज बांग्लादेश की जमाअत का जलसा भी हो रहा है। वहाँ विरोध भी काफ़ी होता है। उनके लिए भी दुआ करें।

ख़ुदा तआला उन सबको अपनी हिफ़ाज़त में रखे और उनका जलसा भी कुशलतापूर्वक सम्पन्न हो।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत-ए-इलाही का मनमोहक और आकर्षक शैली में वर्णन।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 जनवरी 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِناَ الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

मैंने पिछले एक ख़ुत्बे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के संदर्भ में आप की ख़ुदा तआला से प्रेम के पहलू का उल्लेख किया था। आज उसी विषय में कुछ और बयान करूँगा।

यौवन अवस्था में और नुबुव्वत के दावे से पहले भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में ख़ुदा तआला की मुहब्बत का जोश ऐसा था कि आप उससे व्याकुल होकर गुफा में चले जाते और अपने प्रिय ख़ुदा तआला से एकांत में विनय-प्रार्थना में लगे रहते थे।

इसी प्रेम का उल्लेख करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बयान फरमाते हैं कि "मैं देखता हूँ कि गर्मियों का भी आध्यात्मिक उन्नति से विशेष संबंध है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देखो कि ख़ुदा तआला ने आपको मक्का जैसे नगर में पैदा किया और फिर आप उन गर्मियों में अकेले ग़ार-ए-हिरा में जाकर ख़ुदा तआला की इबादत किया करते थे। वह कैसा अद्भुत समय होगा। आप स्वयं ही पानी की मशक उठाकर ले जाते होंगे।

असल बात यह है कि जब ख़ुदा तआला के साथ अपनापन और रस उत्पन्न हो जाता है तो फिर संसार और संसार वालों से एक प्रकार की विरक्ति और अरुचि पैदा हो जाती है। स्वभावतः एकांत और एकांतवास अच्छा लगने लगता है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भी यही अवस्था थी। ख़ुदा तआला की मुहब्बत में आप इतने लीन हो चुके थे कि उसी एकांत में आपको पूर्ण आनंद और रस प्राप्त होता था।

ऐसी जगह जहाँ आराम और सुविधा का कोई साधन न था और जहाँ जाते हुए भी डर लगता हो, आप वहाँ कई-कई रातें अकेले बिताते थे। इससे यह भी मालूम होता है कि आप कितने साहसी और वीर थे। जब ख़ुदा तआला से संबंध प्रबल हो जाता है तो साहस भी आ जाता है, इसलिए मोमिन कभी कायर नहीं होता। संसार वाले कायर होते हैं, उनमें वास्तविक साहस नहीं होता।

इस बात को सुनकर कि ख़ुदा तआला से जिनके संबंध गहरे होते हैं वे एकांत को

पसंद करते हैं, कुछ लोग आपत्ति करते हैं कि फिर उन नबियों और रसूलों के पत्नी-बच्चे क्यों होते हैं? यदि वे एकांत ही पसंद करते हैं तो विवाह क्यों करते हैं? वे बाज़ारों में चलते-फिरते हैं और खाते-पीते भी हैं। क़ुरआन-ए-करीम में भी इसका उल्लेख आया है। लेकिन अफ़सोस है कि ऐसी आपत्ति करने वाले यह नहीं सोचते कि इन लोगों की मिसाल ऐसी है जैसे एक व्यक्ति किसी के दरवाज़े पर भीख माँगने जाए और दूसरा उसका मित्र हो और वह केवल उससे मिलने गया हो। अब यदि वह मित्र अपने मित्र के सामने पुलाव आदि रख देता है तो इसमें उसका क्या दोष है?

दो व्यक्ति जा रहे हैं एक भीख माँगने गया है, दूसरा मित्र के रूप में गया है। अब यदि घर वाला मित्र की खातिरदारी करता है तो इसमें उसका क्या दोष? अर्थात वह मित्र जो अपने मित्र से मिलने गया है उसका कोई दोष नहीं। उस मित्र को उसके भोजन में आनंद आता है, और जो भिखारी है, जो माँगने वाला है, उसे सूखी रोटी का टुकड़ा दे दिया जाता है। यदि वह अधिक देर ठहरे तो धक्का देकर बाहर निकाल दिया जाता है।

दो व्यवहार होते हैं माँगने वाले से अलग व्यवहार और मित्र से अलग व्यवहार। जबकि यह व्यवहार मित्र के साथ नहीं होता कि उसे धक्का दिया जाए, बल्कि उसके अधिक ठहरने और खाने-पीने से घर वालों को स्वयं आनंद होता है। घर वालों का भिखारी से अलग व्यवहार होता है और मित्र से अलग। मित्र की सेवा-सत्कार की जाती है, उसका सम्मान किया जाता है, और भिखारी को कुछ देकर टाल दिया जाता है।

आपने फरमाया कि यही स्थिति उन नबियों और नियुक्त व्यक्तियों की होती है। उनके सामने जो कुछ आता है वह उनकी सांसारिक इच्छाओं का परिणाम नहीं होता। वे तो सारा आनंद और शांति ख़ुदा तआला के स्मरण और उपासना में ही पाते हैं और वास्तव में एकांत को ही पसंद करते हैं, जहाँ वे अपने प्रिय के सामने अपने हृदय की इच्छाएँ और कामनाएँ प्रस्तुत करते हैं और चाहते हैं कि उस अवस्था में कोई उन्हें देख न ले। इसके अतिरिक्त ये संबंध उनकी पूर्णता के लिए होते हैं।"

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 7, पृष्ठ 408-407, संस्करण 1984)

अर्थात ख़ुदा तआला से उनके प्रेम के जो संबंध हैं, वे सर्वोच्च आध्यात्मिक स्तर प्राप्त करने के लिए होते हैं।

ग़ार-ए-हिरा में इबादत का उल्लेख करते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक हदीस में विस्तार से बयान किया है, जो उन्होंने स्वयं आप से सुनी थी। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि सबसे पहले जो वह्यी रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आरम्भ हुई, वह नींद में सच्चे स्वप्नों का देखना था। आप जो भी स्वप्न देखते, वह भोर की रोशनी की तरह स्पष्ट रूप से सत्य हो जाता। अत्यंत सच्चे स्वप्न आते और तुरंत उनका परिणाम सामने आ जाता।

इसके बाद आपको एकांत प्रिय होने लगा और आप ग़ार-ए-हिरा में अकेले रहते और वहाँ इबादत करते। यह इबादत कुछ गिनी-चुनी रातों की होती, जिन्हें आप घर लौटने से पहले पूरी कर लेते और इसके लिए साथ में खाने-पीने का सामान ले जाते। फिर कुछ समय बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास लौटते और उतनी ही रातों के लिए फिर अधिक सामान ले जाते।

आख़िरकार सत्य का प्रकट होना हुआ और उस समय आप ग़ार-ए-हिरा में थे। आपके पास एक फ़रिश्ता आया और उसने कहा पढ़ो। आपने कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फरमाते थे उस फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और इतना दबाया कि मेरी शक्ति अपनी सीमा तक पहुँच गई। फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा पढ़ो। मैंने कहा मैं पढ़ना नहीं जानता। उसने फिर पकड़ा और फिर उसी तरह दबाया कि मैं अत्यधिक व्याकुल हो गया। फिर छोड़ा और कहा पढ़ो। मैंने कहा मैं नहीं पढ़ूँगा। फिर उसने तीसरी बार पकड़ा और ज़ोर से दबाया, फिर छोड़ दिया और कहा

"पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। उसने मनुष्य को जमे हुए रक्त के लोथड़े से पैदा किया। पढ़ो, और तुम्हारा रब अत्यंत कृपालु है।"

(सूरह अल-अलक़ 4-2)

इन आयतों को लेकर रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम गुफ़ा से लौटे। जब आप हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास घर आए तो आपका हृदय तेज़ी से धड़क रहा था। आपने फरमाया मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो। उन्होंने आपको कपड़ा ओढ़ा दिया, यहाँ तक कि आपकी घबराहट दूर हो गई।

फिर आपने उन्हें पूरा घटनाक्रम सुनाया और कहा मुझे अपनी जान का भय हुआ। इस पर हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा हरगिज़ नहीं, ख़ुदा की क़सम! ख़ुदा तआला आपको कभी अपमानित नहीं करेगा। आप रिश्तेदारों का ख़याल रखते हैं, निर्बलों का भार उठाते हैं, वे नेक काम करते हैं जो लुप्त हो चुके हैं, मेहमाननवाज़ी करते हैं और सत्य के मार्ग की कठिनाइयों में सहायता करते हैं। आपने हमेशा सत्य का साथ दिया है, कठिनाइयों के बावजूद।

इसके बाद हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा आपको अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफल के पास ले गईं, जो असद बिन अब्दुलउज़्ज़ा के पुत्र थे। वरक़ा वह व्यक्ति थे जो अज्ञानता के युग में ईसाई हो गए थे और इब्रानी भाषा पढ़ना-लिखना जानते थे। इंजील से जो ख़ुदा तआला चाहता, वह इब्रानी में लिखते थे। वे अत्यंत वृद्ध और अंधे हो चुके थे।

हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उनसे कहा ऐ मेरे चाचा के बेटे! अपने भतीजे की बात सुनो। वरक़ा ने पूछा ऐ मेरे भतीजे! तुमने क्या देखा? रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो कुछ देखा था सब बयान कर दिया। वरक़ा ने कहा यह वही वह्यी लाने वाला फ़रिश्ता है जिसे ख़ुदा तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर उतारा था। काश मैं उस समय जवान होता। काश मैं उस समय जीवित रहूँ जब तुम्हारी क़ौम तुम्हें निकाल देगी।

इस पर रसूलुल्ला सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या वे मुझे निकालेंगे? उन्होंने कहा हाँ। जो संदेश तुम लाए हो, जब भी कोई ऐसा संदेश लेकर आया, उससे शत्रुता की गई। यदि मैं तुम्हारा वह समय पा लूँ तो पूरी शक्ति से तुम्हारी सहायता करूँगा।

इसके बाद वरक़ा शीघ्र ही देहांत कर गए और कुछ समय के लिए वह्यी भी रुक गई। उसमें विराम आ गया।

(सहीह बुख़ारी अनुवादित (उर्दू), जिल्द 1, पृष्ठ 5 से 7, किताब बद्अुल-वह्यी, बाब कैफ़ काना बद्अुल-वह्यी इला रसूलुल्लाह ﷺ..., हदीस 3, नज़ारत इशाअत रब्वा)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं "असल बात यह है कि क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षा के अनुसार हमें यह बात इस प्रकार मालूम होती है कि एक ओर तो ख़ुदा तआला क़ुरआन-ए-करीम में अपनी कृपा, दया, अनुग्रह और मेहरबानियों के गुणों का वर्णन करता है और अपने रहमान होने को प्रकट करता है, और दूसरी ओर फरमाता है

اَنۡ لَّيۡسَ لِلۡاِنۡسَانِ اِلَّا مَا سَعٰي۔ (अन-नज्म: 40)

और मनुष्य को वही मिलता है जिसके लिए वह प्रयास करता है।

और

وَالَّذِيۡنَ جَاهَدُوۡا فِيۡنَا لَنَهۡدِيَنَّهُمۡ سُبُلَنَا۔ (अल-अनकबूत: 70)

और जो लोग हमसे मिलने की कोशिश करते हैं, संघर्ष करते हैं, हम अवश्य उन्हें अपने मार्गों की ओर आने की क्षमता प्रदान करेंगे।"

आप फरमाते हैं कि ख़ुदा तआला यह कहकर अपने अनुग्रह को प्रयास और संघर्ष पर निर्भर कर देता है। अर्थात प्रयास भी करो, तब अनुग्रह मिलेगा, और संघर्ष भी करो।

फरमाया "इसके अतिरिक्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम का आचरण हमारे लिए एक उत्तम आदर्श और उत्कृष्ट नमूना है। सहाबा के जीवन में ध्यान से देखो, क्या उन्होंने केवल साधारण नमाज़ों से ही वे ऊँचे दर्जे प्राप्त कर लिए थे? नहीं, बल्कि उन्होंने ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपनी जानों तक की परवाह नहीं की और भेड़-बकरियों की तरह ख़ुदा तआला के मार्ग में क़ुर्बान हो गए। तब जाकर कहीं उन्हें वह पद प्राप्त हुआ।"

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की संगति में ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करने का प्रयास किया और इसके लिए हर प्रकार की क़ुर्बानी के लिए तैयार हो गए और क़ुर्बानियाँ दी भी। फिर उन्हें ऐसा दर्जा मिला कि ख़ुदा तआला उनसे प्रसन्न हो गया।

आप फरमाते हैं "हमने बहुत से लोगों को ऐसा देखा है कि वे चाहते हैं कि एक फूँक मारकर उन्हें वे ऊँचे दर्जे दिला दिए जाएँ और वे सीधे अर्श तक पहुँच जाएँ।"

आपने फरमाया "हमारे रसूल अकर्म सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बढ़कर कौन होगा? वे श्रेष्ठ मनुष्यों में भी श्रेष्ठ और रसूलों व नबियों में भी श्रेष्ठ थे। जब उन्होंने भी फूँक मारकर वे काम नहीं किए, तो और कौन है जो ऐसा कर सके?

देखो, आपने ग़ार-ए-हिरा में कितनी-कितनी साधनाएँ कीं। ख़ुदा जाने कितने समय तक विनय और रो-रोकर प्रार्थना करते रहे। आत्म-शुद्धि के लिए कैसी-कैसी कठिन मेहनतें और कठोर परिश्रम किए। तब जाकर कहीं ख़ुदा तआला की ओर से अनुग्रह उतरा।

असल बात यही है कि जब तक मनुष्य ख़ुदा के मार्ग में अपने ऊपर एक प्रकार की मृत्यु और लय की अवस्था न ला ले, तब तक उधर से कोई ध्यान नहीं दिया जाता। लेकिन जब ख़ुदा देखता है कि मनुष्य ने अपनी ओर से पूर्ण प्रयास किया है और मुझे पाने के लिए अपने ऊपर मृत्यु जैसी अवस्था ले आया है, तब वह स्वयं उस पर प्रकट

शेष पृष्ठ 9 पर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 10 Thursday 19-26 February 2026 Issue No. 8-9

Act. MANAGER :
ATHAR AHMAD SHAMIM
Mobile : +91-9815639670
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद रज़ि. जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से हज़रत ख़दीजा का विवाह

जब मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पच्चीस वर्ष के हुए तो आप के सदाचार, संयम तथा शुभ कर्मों की ख्याति प्रायः फैल चुकी थी और लोग आप की ओर संकेत करते और कहते कि यह सत्यवादी और अमानतदार व्यक्ति जा रहा है। ये सूचनाएं मक्का की एक धनाढ्य विधवा को भी पहुँची। उसने आप (स.अ.व.) के चाचा अबू तालिब से इच्छा प्रकट की कि वह अपने भतीजे मुहम्मद (स.अ.व.) से कहें कि उस का व्यापार संबंधी सामान शाम के व्यापारी दल के साथ जा रहा है वह उसका प्रबन्ध अपने हाथ में ले । अबू तालिब ने आप से चर्चा की और आपने इस बात को स्वीकार कर लिया। इस यात्रा में आपको बड़ी सफलता प्राप्त हुई तथा आप आशा से बढ़कर लाभ के साथ लौटे। ख़दीजा ने महसूस किया कि लाभ केवल मंडियों की परिस्थितियों के कारण नहीं अपितु क़ाफ़िले के सरदार की नेकी और ईमानदारी के कारण है। उसने अपने दास मैसरह से जो आपके साथ था आप के आचरण के बारे में पूछा। उसने भी उसके विचार का समर्थन किया और बताया कि आपने यात्रा में जिस ईमानदारी और लगन से कर्त्तव्य निभाया, वह केवल आप ही का कार्य था। हज़रत ख़दीजा की तबियत पर इस बात का विशेष प्रभाव पड़ा। इसके बावजूद कि वह इस समय चालीस वर्ष की थीं और दो बार विधवा हो चुकी थीं, उन्होंने अपनी एक सहेली को रसूले करीम (स.अ.व.) के पास भिजवाया ताकि मालूम करे कि क्या आप उन से विवाह करने पर सहमत होंगे। वह सहेली आप के पास आई और उसने आप से पूछा कि आप विवाह क्यों नहीं करते ? आप ने कहा मेरे पास कोई धन नहीं है जिस के द्वारा मैं विवाह करूँ। उस सहेली ने कहा— यदि इस कठिनाई का समाधान हो जाए तथा एक सुशील और अमीर स्त्री से आप का विवाह हो जाए तो फिर ? आप ने कहा— वह स्त्री कौन है ? उस ने कहा ख़दीजा रज़ि.। आप ने कहा कि मैं उस तक किस प्रकार पहुँच सकता हूँ ? इस पर उस सहेली ने कहा कि यह मेरा ज़िम्मा रहा। आप ने फ़रमाया मुझे स्वीकार है। तब ख़दीजा रज़ि. ने आप के चाचा के माध्यम से विवाह का दृढ़तापूर्वक निर्णय किया और आप का विवाह हज़रत ख़दीजा रज़ि. से हुआ। एक निर्धन और अनाथ युवक के लिए धन-दौलत का यह प्रथम द्वारा खुला, परन्तु उसने इस दौलत का जिस प्रकार उपयोग किया वह समस्त संसार के लिए एक शिक्षाप्रद घटना है।

दासों की स्वतंत्रता और ज़ैद रज़ि. की चर्चा

आप (स.अ.व.) के विवाहोपरान्त जब हज़रत ख़दीजा रज़ि. ने महसूस किया कि आप का संवेदनशील हृदय ऐसे जीवन में कोई विशेष आनन्द नहीं पाएगा कि आप (स.अ.व.) की पत्नी धनवान हो और आप उसके मुहताज हों। अतः उन्होंने रसूले करीम (स.अ.व.) से कहा कि मैं अपना धन और दास आपकी सेवा में प्रस्तुत करना चाहती हूँ। आप (स.अ.व.) ने कहा— ख़दीजा रज़ि. क्या वास्तव में ? जब उन्होंने पुनः इक़रार किया तो आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया— मेरा प्रथम कार्य यह होगा कि मैं दासों को आज़ाद करूँ। अतः आप ने उसी समय ख़दीजा रज़ि. के दासों को बुलाया और कहा कि तुम सब लोग आज से आज़ाद हो और माल का अधिकांश भाग ग़रीबों में बांट दिया। आप ने जिन दासों को आज़ाद किया उनमें एक ज़ैद नामक दास भी था। वह अन्य दासों से अधिक निपुण और होशियार था क्योंकि वह एक सभ्य और सम्मानित ख़ानदान का लड़का था, जिसे बचपन में डाकू चुरा कर ले गए थे और वह बिकता-बिकता मक्का में पहुँचा था। उस युवक ने अपनी निपुणता और होशियारी से इस बात को समझ लिया कि आज़ादी की तुलना में इस व्यक्ति की दासता अधिक श्रेयस्कर है। जब आप रज़ि. ने दासों को आज़ाद किया जिस में ज़ैद भी था तो ज़ैद ने कहा— आप तो मुझे आज़ाद करते हैं परन्तु मैं आज़ाद नहीं होता, मैं आप के साथ ही रहना चाहता हूँ। अतः वह आप के साथ रहा और आप (स.अ.व.) के प्रेम में दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला गया। चूंकि वह एक धनाढ्य ख़ानदान का लड़का था, उसके पिता और चाचा डाकुओं के पीछे-पीछे अपने बच्चे को ढूंढते हुए निकले अन्ततः उन्हें मालूम हुआ कि उनका लड़का मक्का में है। अतः वह मक्का में आए और पता लगाते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की सभा में पहुँचे और आप से विनती की कि आप (स.अ.व.) हमारे बच्चे को आज़ाद कर दें और जितना धन चाहें ले लें। आप (स.अ.व.) ने फ़रमाया— ज़ैद को तो मैं आज़ाद कर चुका हूँ और वह बड़ी प्रसन्नता से आप के साथ जा सकता है। फिर आप ने ज़ैद को बुला कर उनके पिता और चाचा से भेंट करा दी और जब दोनों लोग मिल चुके और आँसुओं से अपने हृदय के भार को हल्का कर चुके तो ज़ैद के पिता ने उस से कहा कि इस सुशील व्यक्ति ने तुम्हें आज़ाद कर दिया है, तुम्हारी माता तुम्हारी याद में तड़प रही है अब तुम शीघ्र चलो और उसके लिए चैन और आराम का कारण बनो। ज़ैद ने कहा— माता-पिता किसे प्रिय नहीं होते ! मेरा हृदय भी उस प्रेम से ख़ाली नहीं है, परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह का प्रेम मेरे हृदय में इतना अधिक समा चुका है कि उसके पश्चात् मैं आप से पृथक नहीं हो सकता। मुझे प्रसन्नता है कि मैं आप लोगों से मिल लिया, परन्तु मुहम्मद (रसूलुल्लाह स.अ.व.) से पृथक होना मेरी सामर्थ्य से बाहर है। ज़ैद के पिता और चाचा ने बहुत ज़ोर दिया, परन्तु ज़ैद ने उनके साथ जाना स्वीकार न किया। ज़ैद के इस प्रेम को देखकर रसूलुल्लाह (स.अ.व.) खड़े हुए। फ़रमाया— ज़ैद आज़ाद तो पहले ही था, परन्तु आज से यह मेरा बेटा है। इस नई परिस्थिति को देखकर ज़ैद के पिता और चाचा वापस चले गए और ज़ैद सदैव के लिए मक्का के हो गए।

शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad